

اقامة البراهين على من استغاث بغير الله  
او صدق الكهنة والعرافين

# गौरुल्लाह से इरियाह शरफ़ दलायल की रोशनी में

समाहित अश-शैफ़ अब्दुल अजीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन भाज़ (र.अ.)



*Islamic Information Centre-Kutch*

حراستِ توحيد

હિરાસતે તૌહીદ

اقامة البراهين على من استغاث بغير الله

او صدق الكهنة والعرافين

ગૌરુલ્લાહ સે ફરિયાદ

શરહ દલાઈલ કી રોશની મેં

તાલીફ

સમાહતુશ્-શૈખ

અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ (રહ.)

(સાબિક મુફ્તીએ આ'ઝમ, સઉદી અરબ)

ગુજરાતી લિપિયાંતર : મુહમ્મદ જમાલ પટીવાલા

— શાએકદા —



ઈસ્લામિક ઈન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ કે પાસ, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મોબાઈલ : (+91) 8401786172 Blog : [www.iickutch.blogspot.in](http://www.iickutch.blogspot.in)

Gairullah se Fariyad-Hirasate Tauheed (Gujarati Lipiyantar)  
By : Samahat As-Shaikh Abdul Aziz Bin Abdullah Bin Baaz  
Gujarati Lipiyantar : Muhammad Jamal Patiwala

–: Publisher :–

ISLAMIC INFORMATION CENTRE-KUTCH  
Near Hotel Noorani, Danda Bazar, BHUJ (Kutch)  
Mobile : 8401786172,  
Blog : [www.iickutch.blogspot.in](http://www.iickutch.blogspot.in)

પ્રથમ આવૃત્તિ  
પ્રત : ૧૦૦૦  
નવેમ્બર, ૨૦૧૭

પૃષ્ઠ : ૪૮

---

મુદ્રક : યુનિક ઓફસેટ, અહમદાબાદ



## तकदीम

सब किसम की ता'रीफ अल्लाह के लिये सजावार है, और अल्लाह के रसूल पर, आप के सहाबा पर ओर जो भी आप को दोस्त बनाये सब पर सलात-व-सलाम हो.

अम्मा बाद ! यूंके अकीदमे तौहीद ही वह बुनियाद है, जिस पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, आप पर बेहतरीन रहमते और पाकीजा सलामती हो, की दा'वत काईम है, ओर यह बुनियाद हकीकतन् तमाम रसूलो की जौलानगाल है, जैसा के अल्लाह त्आला इरमाता है :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ

“और हमने हर उम्मत में रसूल भेजा, ताके वह लोग अल्लाह की ईबादत करें और गैरुल्लाह की हुकमरानी से बयें.” (सूर: नहल, १६:३६)

और इस दा'वत पर पुप्ता अज़्म का तकाजा मुफ्तलिफ किसम की बिदआत व अबातील से जंग है, क्यूं के हर मुसलमान के लिये जुदुरी है के वह अपने दीन में सोय-बिचार करे और शरीअते ईस्लामी के मुताबिक अल्लाह त्आला की ईबादत बजा लाये.

ईस उम्मत के अस्लाफ में से पेहले मुसलमान अपने दीन के मुआमले में छिदायत पर थे, क्यूं के उनके आ'माल, बलके तमाम मुआमलात कुर्आने-करीम और सुन्नते मुतह्दरा के मुताबिक हुवा करते थे.

फिर जब मुसलमान की अक्सरियत अपने अकाईद व आ'माल में इस सीधी राह, याअ्नी किताब व सुन्नत की राह से हट गई, तो उनके अकाईद, मजाहिब, सियासत और ओहकाम के लिहाज से कई फिरके बन गये. इस ईन्डिराफ का नतीजा यह हुवा के उनमें बिदआत, अबातील और शअ्बदाबाजी को इरोग हासिल हुवा, जिससे अअ्दाअे ईस्लाम को ईस्लाम और मुसलमानो पर तअ्नाजनी की राह मिल गई.

उल्माअे ईस्लाम अपनी तालीफात में उन पुरानी और नई बिदआत से उरते



---

रहे. उन्ही अहम तालीफ़ात में से ओक किताब 'ईकामतुल ज़राहीन' है, ज़ो समाहतुल अलाम अशू-शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ ने लिखी है, ज़ो दर्जे ज़ेल तीन रिस्सालों के मज़मूअे पर मुश्तमिल है :

- (१) नबी ﷺ से ईस्तगाशा का हुक्म.
- (२) ज़िनों और शैतानों से ईस्तगाशा और उनके लिये नज़रों का हुक्म.
- (३) बिदअईयल और शिरकियल अवराह व वज़ाईफ़ को मा'भूल बनाने का हुक्म.

और रियासते सउिदी अरब, ज़ो ईस ज़ित्ते में ईस्लामी द्वा'वत का जंदा संभाले हुवे है, आप के सामने यह तीनों रिसाईल पेश कर रही है, ताके वह भी बिदआत व ज़ुराफ़ात से जंग में छिस्सा ले सके और मुतवाज़न सकाईत और ईस्लाम के हकीक इहम को बलंद कर सके.

हम अल्लाह बलंद व कादिर से द्दुआ करते है के ईस रिस्साले से उसके बंदों को इयादा पहुंचये. — **وَصَلَّى اللهُ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ.** (व-सल्लल्लाहु अला नबिय्यिना मुहम्मद व आलिही व-सहाबिही व सल्लम.)

## पेहला रिसाला

हर तरह की ता'रीफ़ अल्लाह को सज़ावार है और रसूलुल्लाह ﷺ पर, आप की आल पर, आप के सहाबा पर ओर जो भी आप की हिदायत से हिदायत पाये, सब पर सलातो-सलाम हो. अम्मा बाद !

मुजतमअ कुवैती के सहीफ़ा सुमारा नंबर १५, मोरिषा १९-४-१३९० हिजरी में “ई जिकुल मवलूदुन्-नबवीउश्-शरीफ़” के उन्वान के तहत यंद अश्आर शायेअ हुवे, जो नबी ﷺ से ईस्तगाशा, अपनी उम्मत को संभालने, उसकी मदद करने और ईस तफ़रका व ईम्पिलाफ़ से निजात दिलाने के लिये कहे गये थे. ये तफ़रका व ईम्पिलाफ़ ईस उम्मत में बढा, जिसका नाम कभी ‘आमना’ (अम्नवाली) था. ईन ईशाराकद्दा अश्आर में से यंद काबिले जिफ़ है :

अय अल्लाह के रसूल ! ईस ज़ान को संभाल लिजिये.

जो जंग की आग लडका रहा है और जो लडकाये, उसे ईस लपेट में ले लेता है.

अय अल्लाह के रसूल ! ईस उम्मत को संभाल लिजिये,

जिसकी रात का सफ़र शक के अंधेरो में लंबा हो गया है.

अय अल्लाह के रसूल ! ईस उम्मत को संभाल लिजिये,

जिसकी रोनक अफ़सोस की हलाकतों में जतम हो गई है...

ता आं के यूं कडा :

अय अल्लाह के रसूल ! ईस उम्मत को संभाल लिजिये,

जिसकी रात का सफ़र शक के अंधेरो में लंबा हो गया है.

आप उम्मत की जल्द मदद किजिये, जैसा के आप ने बद्र के दिन मदद की थी,

जब अल्लाह त्आला को पुकारा था,

तो कमज़ोरी शानदार इत्ह में तबदील हो गई,

क्यूं के अल्लाह त्आला के लश्कर जैसे हैं, जिन्हें तू टूट्न नहीं सकता.

(अल्लाहु अकबर !) तहरीर करनेवाले ने अपनी निदा और ईस्तगाशा को ईस अंदाज़ से रसूलुल्लाह ﷺ पर पेश किया और मुतालबा किया के वह जल्द अज़ जल्द उम्मत की मदद को पहुंचे और उसे संभाल लें, जैसे वह ईस बात को बिलकुल लूले हुवे था या ईससे जाहिल था के मदद तो सिर्फ़ अल्लाह अकेले के हाथ मे है. ये नबी ﷺ या मज्लूक़ात में से किसी भी दूसरे के हाथ में नहीं है, युनांये अल्लाह सुब्धानहू व त्आला ने अपनी किताबे-मुबीन में इरमाया :

وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٣﴾

“और मदद तो अल्लाह गालिब हिकमतवाले के पास है.”

(सूर: आले एमरान, 3:92-94)

नीज फरमाया :

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۖ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي

يَنْصُرْكُمْ مِّنْ بَعْدِهِ ۗ

“अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे, तो कोई तुम पर गालिब नहीं आ सकता और अगर तुम्हें रुखा करे तो और कौन है, जो उसके बाद तुम्हारी मदद को पछुयेगा ?”

(सूर: आले एमरान, 3:95-96)

और ये बात सरील हुक्म और एजमाअ से मालूम हो सकती है के अल्लाह त्आला ने पकत को एस लिये पैदा किया है के वो उसकी एबाहत करे और रसूल भेजे और किताबें नाजिल की, ताके एस एबाहत की वजालत करे और एसकी तरफ द्वा'वत दे, जैसा के अल्लाह त्आला ने फरमाया :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥١﴾

“और मैंने जिन्नों और इन्सानों को मजज एस लिये पैदा किया है के वो मेरी एबाहत करे.” (सूर: आरियात, 49:51)

नीज फरमाया :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۗ

“और हमने हर उम्मत में अक रसूल भेजा, ताके वो अल्लाह की एबाहत करे और गैरुल्लाह की हुक्मरानी से बचे.” (सूर: नड्ल, 16:36)

नीज फरमाया :

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا

فَاعْبُدُونِ ﴿٢١﴾

“और आप से पेहले हमने जो भी रसूल भेजा उसे हम यही वही करते रहे के मेरे सिवा एलाह नहीं, लिखाज मेरी ही एबाहत करो.” (सूर: अंबिया, 21:21)



नीज इरमाया :

الرَّبِّ كِتَابٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ۝ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ إِنَّنِي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ۝

“इस किताब की आयत को मुहकम बनाया गया है, फिर हकीम व ખબીर की तरफ से उसे ખोलकर बयान किया गया है के अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करना. मैं अल्लाह की तरफ से तुम्हारे लिये डरानेवाला और ખुशखबरी देनेवाला हूँ.”

(सूर: हूद, ११:१-२)

इन आयाते मुहकमात में अल्लाह सुब्हानहू ने ये वजाहत इरमाई है के जिन व इन्स को मज्ज इंस लिये पैदा किया गया है के वे उस वलदहू ला-शरीक की इबादत करें. नीज ये वजाहत की के अल्लाह के रसूलों को, उन पर सलातो-सलाम हो, इसी इबादत के हुकम और इसके मुખालिफ़ जो खीजे हैं उसकी मनाही के लिये भेजा, फिर ये भी खबर दी के इस किताब की आयात को मुहकम बनाया गया है, फिर इसे खोलकर बयान किया गया है, ताके अल्लाह के सिवा किसी दूसरेकी इबादत ना की जाये और इबादत का मतलब अल्लाह त्आला की तौहीद और उसके अवामिर को बज्ज लाना और उसकी नवाही को छोडने के जरिये उसकी इताअत है और अल्लाह त्आला ने बहुत सी आयात में इन्हीं बातों का हुकम दिया है. मसलन् अल्लाह त्आला का ये इरशाद :

وَمَا أَمْرٌ إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ حُنَفَاءَ

“उनको हुकम तो यही दिया हुआ था के इज्जलासे अमल के साथ यकसू होकर अल्लाह की इबादत करें.” (सूर: अय्यिना, ८८:५)

नीज इरमाया :

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ

“और तेरे परवरदिगार ने इसला कर दिया है के तुम सिर्फ उसीकी इबादत करना.” (सूर: बनी इसराईल, १७:२३)

नीज इरमाया :

فَعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۗ إِلَّا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۗ

“લિહાજા ખાલિસતન્ અલ્લાહ હી કી ઈબાદત કરો, દેખો ઈબાદત ખાલિસતન્ અલ્લાહ હી કે લિયે હૈ.” (સૂર: ઝુમર, ૩૮:૨)

ઔર ઈસ મઝમૂન કી આયાત બહુત હૈ, જો સબ ઈસ બાત પર દલાલત કરતી હૈ કે ખાલિસતન્ અલ્લાહ અકેલે કી ઈબાદત કરના ઓર અલ્લાહ કે સિવા અંબિયા વ ગૈરુલ્લાહ કી ઈબાદત કો છોડના વાજિબ હૈ, ઔર ઈસમે કોઈ શક નહીં કે દુઆ ઈબાદત કી અહમ કિસ્મ ઔર સબ કિસ્મોં કી જામેઅ હૈ, લિહાજા ખાલિસતન્ અલ્લાહ અકેલે કો હી પુકારના વાજિબ હૈ, જૈસા કે ઈરશાદે બારી હૈ :

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ﴿١٣﴾

“અલ્લાહ કો ખાલિસ કરકે પુકારો, ઈબાદત અલ્લાહ હી કે લિયે હૈ, ખ્વાહ યે બાત કાફિરોં કો બૂરી હી લગતી હો.” (સૂર: મુ'મિન, ૪૦:૧૪)

નીઝ ફરમાયા :

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴿١٥﴾

“ઔર મસ્જિદેં અલ્લાહ હી કે લિયે હૈ, લિહાજા અલ્લાહ કે સાથ કિસી ઓર કો મત પુકારો.” (સૂર: જિન્ન, ૭૨:૧૮)

ઔર યે આયત તમામ મખ્લૂકાત કો આમ હૈ, ખ્વાહ વો અંબિયા હોં યા કોઈ ઔર હોં, કયૂં કે ‘અહદન્’ કા લફઝ નુકરહ હૈ ઔર નહીં કે સિયાક મેં હૈ. ગોયા વહ અલ્લાહ સુબ્હાનહૂં કે સિવા હર એક ચીઝ કો આમ હૈ. નીઝ ઈરશાદે બારી હૈ :

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ؕ

“ઔર અલ્લાહ કે સિવા કિસી કો મત પુકારો, જો ના તુમ્હેં કુછ ફાયદ દે સકતા હૈ, ના તુમ્હેં કોઈ દુ:ખ પહુંચા સકતા હૈ.” (સૂર: યૂનુસ, ૧૦:૧૦૬)

ઔર યે ખિતાબ નબી ﷺ કે લિયે હૈ ઔર યે તો માલૂમ હૈ કે અલ્લાહ સુબ્હાનહૂં ને આપકો શિર્ક સે મહફૂઝ રખા હૈ. ઈસસે મુરાદ સિર્ક યહ હૈ કે ઈસસે દૂસરોં કો ડરાયા જાએ. નીઝ ઈરશાદે બારી હૈ :

فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٦﴾

“તુમને (શિર્ક) કિયા તો તુમ ઝાલિમોં સે હો જાઓગે.” (સૂર: યૂનુસ, ૧૦:૧૦૬)

ફિર જબ આદમ عليه السلام કી તમામ તર અવલાદ કે સરદાર કા યે હાલ હો કે અગર

वो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को पुकारे तो जालिमों से हो जाये, फिर अगर कोई दूसरा पुकारे तो उसका क्या हाल होगा, और जुल्म का लफ्ज जब मुतलकन् आये तो इससे मुराद शिर्क अकबर होता है, जैसा के अल्लाह सुब्हानहू ने फरमाया :

وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١٠٩﴾

“और काफिर ही जालिम है.” (सूर: बकरह, २:२५४)

नीज फरमाया :

إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

“बिला-शुबा शिर्क ही बडा जुल्म है.” (सूर: लुकमान, ३१:१३)

गोया इन आयात और इनके इलावा दूसरी आयात से ये मालूम होता है के अल्लाह के सिवा दूसरी चीजों को, ज्वाह वो ईतशुदा हों या दरभ्र हों या भूत वगैरह हों, पुकारना अल्लाह अज-व-जल के साथ शिर्क है, और ये उस इबादत के मनाई है, जिसकी खातिर अल्लाह तआला ने जिनों और इन्सानों को पैदा किया और इस बात की वजाहत और इसकी तरफ दा'वत देने के लिये रसूल भेजे और किताबें नाजिल फरमाई, ओर यही ला-इलाह इल्लल्लाह के मान्नी है. गोया इसके मान्नी ये है के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूदे बर-हक नहीं, ओर ये बात गैरुल्लाह की इबादत की नहीं करती है ओर इसे अल्लाह अकेले के लिये साबित करती है. अल्लाह सुब्हानहू फरमाता है :

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ

“ये इस लिये के अल्लाह ही बर-हक है ओर उसके सिवा जिसे भी ये लोग पुकारते हैं वो बातिल है.” (सूर: हज्ज, २२:६२)

और यही बात दीन की असल और मिल्लत की बुनियाद है और इस असल की सिलत के बाद ही कोई इबादत सही हो सकती है, जैसा के अल्लाह तआला फरमाता है :

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ لَئِنْ أَسْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ

عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٥١﴾

“आप की तरफ और आप से पेहले लोगों की तरफ यही वही की गई के अगर आप शिर्क करेंगे, तो आप के अमल बरबाद हो जायेंगे और आप जियांकारों से हो जायेंगे.” (सूर: जुमर, ३८:६५)



नीज अल्लाह ने इरमाया :

وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧٧﴾

“और अगर वो शिर्क करते, तो उनके सब आ'माल बरबाद हो जाते.”

(सूर: अन्-आम, ६:८८)

और दीने-ईस्लाम हो बडे उसूलों पर मबनी है. अक ये के अल्लाह अकेले के सिवा किसी की ईबादत ना की जाओ और दूसरे ये के अल्लाह के नबी और रसूल मुहम्मद ﷺ की शरीअत के मुताबिक ईबादत की जाओ और यही ईस शहादत 'ला-ईलाह ईल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' के माअ्नी है. लिहाजा जो शप्स मुरदों को पुकारे, प्वाह वो नबी हों या कोई और हों, या बूतों को या दरख्तों, पत्थरों या उन के ईलावा मप्लूकत में से किसीको पुकारे या उनसे इरियाद करे या कुरबानीयों और नजरानों के जरिये करीब होना चाहे या उनके लिये नमाज गुजारे या सिजदे करे तो बिलाशुबा उसने अल्लाह के सिवा उन्हें रब बना लिया और अल्लाह सुब्हानहू का शरीक बनाया, और ये उस असल के मुफालिह और 'ला-ईलाह ईल्लल्लाह' के माअ्नी के मनाई है, जैसे कोई शप्स दीन में नया काम करे, जिसकी अल्लाह ने ईजाजत नहीं दी, तो उस पर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की शहादत के माअ्नी मुतलक्कीक नहीं हुवे. युनांये अल्लाह त्आला इरमाता है :

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِن عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُورًا ﴿٧٨﴾

“जो काम उन्होंने ने किये होंगे हम उनकी तरफ बढेंगे तो उन्हें उड़ता हुआ गुबार बना देंगे.” (सूर: कुरकान, २५:२३)

और ये आ'माल उस शप्स के होंगे जो अल्लाह अज-व-जल के साथ शिर्क की हालत में मरा हो, या जैसे बिदई आ'माल जिनकी अल्लाह त्आला ने ईजाजत नहीं दी. गोया जैसे आ'माल कियामत के दिन उड़ता हुआ गुबार बन जायेंगे, क्यूं के वो शरीअते मुतलहुरा के मुवाफिक ना थे, जैसा के नबी ﷺ ने इरमाया है :

“जिस शप्स ने हमारे ईस अम्र (शरीअत) में कोई नया काम निकाला, जो पेहले ना था, तो वो काम भरदूद है.”

ईस हदीस की सिहत पर शैबैन का ईत्तिफाक है और ये मरासलानिगार अपनी इरियाद और हुआ के लिये रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ मुतवज्जह हुवा और रब्बुल आलमीन से अे'राज किया, जिसके कबजमे कुदरत में मदद, नफा और नुकसान है, जो किसी दूसरे के हाथ में नहीं, और ईसमें कोई शक नहीं के ये बहुत बडा जुल्म और

अजीम किस्म का शिर्क है. जब के अल्लाह तूआला ने मलज उस (अल्लाह)से दुआ का हुक्म दिया है और ये वादा किया है के जो उसे पुकारेगा, वो उसकी दुआ कुबूल फरमायेगा और ये भी धमकी दी है के जो शप्स इस बात से तकब्बुर करेगा वो उसे जहन्नम में दाखिल करेगा, युनांये फरमाया :

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۗ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرِينَ ﴿٤٠﴾

“और तुम्हारे परवरदिगार ने फरमाया : मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा. बिलाशुबा जो लोग मेरी ईबादत से तकब्बुर करते हैं वो जलील व प्वार छोकर जहन्नम में दाखिल होंगे.” (सूर: मु’मिन, ४०:६०)

इस आयत में ‘दाखिरीन’ का माअनी जबरदस्त और जलील है. ये आयते-करीमा इस बात पर दलावत करती है के दुआ ईबादत ही होती है. नीज इस बात पर भी के जो शप्स उससे तकब्बुर करे उसका ठिकाना जहन्नम है. ये तो उस शप्स का डाल है, जो अल्लाह से दुआ करने से तकब्बुर करे. अब जो शप्स दुआ ही किसी दूसरे से करे और अल्लाह से अे’राज करे उसका क्या डाल होगा, जब के अल्लाह सुब्दानलू करीब है, दुआ कुबूल करनेवाला है, हर चीज का मालिक और हर चीज पर कादिर है, जैसा के ईरशादे बारी है :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۗ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ﴿٤٠﴾

“जब मेरे बंदे आप से मेरे मुताव्लिक पूछें तो उन्हें बतला दिजिये के मैं करीब ही हूँ. जब भी मुझे कोई पुरकारनेवाला पुकारता है तो मैं उसकी पुकार का जवाब देता हूँ. लिहाजा उन्हें यादिये के वो मेरा हुक्म मानें और मुज पर ईमान लाओं, ताके वो राहे-हिदायत पर आओं.” (सूर: बकरह, २:१८६)

और रसूलुल्लाह ﷺ ने सहीह हदीस में जबर दी है के दुआ ही ईबादत है और आपने अपने ययाजाद अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضي الله عنه से फरमाया :

“अल्लाह तूआला को याद रज, अल्लाह तुझे याद रयेगा, तु उसे अपने सामने पायेगा. जब तुझे सवाल करनार हो, अल्लाह से सवाल कर और जब तुझे मदद दरकार हो तो अल्लाह ही से मदद मांग.”

इस हदीस को तिरमिजी वगैरहने रिवायत किया है. नीज आप ﷺ ने फरमाया :

“जो शप्स ईस डाल में मरा के अल्लाह के साथ किसी शरीक को पुकारता था तो वो दोऊभ में दाबिल डोगा.”

ईस डदीस को बुजारी ने रिवायत किया है. नीज सहीहैन में है के नबी ﷺ से पूछा गया, “सब से बडा गुनाह कौन सा है?” तो आप ﷺ ने इरमाया : “ये के तु किसी को अल्लाह का मद-मुकाबिल समजे, जब के उसीने तुजे पैदा किया है.”

और ‘नद’ का माअनी नजीर और मसील है. लिखाजा जो शप्स अल्लाह के सिवा किसी को पुकारे या उससे इरियाद करे या ईबादत करे या उसे नजराना पेश करे या उसके लिये कुरबानी करे या ईबादत की कोई भी किस्म उसके लिये बज्रा लाओ, तो उसने उसको अल्लाह का मद-मुकाबिल बनाया. ईससे कुछ इर्क नहीं पडता के वो कोई नबी डो या वली डो या इरिश्ता डो या जिन्न डो या भूत डो या मज्लूकत में से कोई और चीज डो. अलबत्ता किसी जिंदा डोजिर शप्स से किसी ऐसी चीज का सवाल करना या उससे मदद यालना जिसके जालरी अस्बाब मौजूद डों और वो ईस पर कादिर भी डो तो ये शिर्क नहीं, बल्के ये तो आदी उमूर हैं, जो मुसलमानों के लिये ज़ाईज है, जैसा के मूसा عليه السلام के किस्से में अल्लाह त्आला ने इरमाया :

فَاسْتَعَاثَهُ الَّذِي مِنْ شَيْعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ ۝

“तो जो शप्स मूसा عليه السلام के गिरोह से था उसने अपने दुश्मन इरीक के आदमी पर मूसा عليه السلام से इरियाद तलब की.” (सूर: कसस, २८:२१)

और जैसा के अल्लाह त्आला ने किस्सअे मूसा عليه السلام डी में इरमाया :

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ

“(डजरत मूसा) वहां से डरते-डरते निकले, वो ये देख रहे थे के...”

और जैसा के ईन्सान जंग वगैरड में अपने साथियों से जैसे उमूर पर इरियाद करता है, जो लोगों को पेश आते हैं और वो अेक-दूसरे की मदद के मुलताज डोते हैं, और अल्लाह त्आला ने अपने नबी ﷺ को ये हुक्म दिया के वो लोगों तक ये बात पहुंचा दें के वो किसी के नई-नुकसान के मालिक नहीं डे. युनांये सूर: जिन्न में इरमाया :

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا

وَلَا رَشَدًا ۝

“आप कड दिजिये के मैं अपने परवरदिगार को पुकारता हुं और किसी को



उसका शरीक नहीं बनाता. आप कल दिये के में ना तुम्हारे नुकसान का मालिक हूँ और ना भलाई का.” (सूर: जिन्न, ७२:२०-२१)

नीज सूर: आ'राफ़ में फ़रमाया :

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ كُنْتَ أَعْلَمُ  
الْغَيْبِ لَاسْتَكْتَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۗ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۗ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ  
وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٧﴾

“आप कल दिये के में तो अपने आप के नफ़े और नुकसान का भी मालिक नहीं, मगर जो कुछ अल्लाह चाहे, और अगर मैं गैब जानता होता तो बहुत सी भलाईयां जमा कर लेता और मुझे कोई बुराई न पहुँचती. मैं तो सिर्फ़ उन लोगों को भुशभबरी देनेवाला और उरानेवाला हूँ, जो ईमान लाते हैं.” (सूर: आ'राफ़, ७:१८८)

ईस मज़मून की आयत बहुत हैं. नीज आप ﷺ अपने परवरद्विगार के सिवा ना किसी को पुकारते थे और ना इरियाद करते थे. आप ने बद्र के दिन अल्लाह ही से इरियाद की और दुश्मन के मुकाबले में मदद चाही और ईस मुआमले में बहुत रो-रो के दुआओं की. आप फ़रमाते थे : “अय अल्लाह ! मेरे परवरद्विगार ! जो आप ने मुझसे वादा किया है वो पूरा इरमाईये.” यहाँ तक के उररत अबू बक़र رضي الله عنه कलने लगे : “अय अल्लाह के रसूल ! अल्लाह आप को काफ़ी है. उसने आप से जो वादा किया है वो पूरा करेगा.”

ईसी बारे में अल्लाह त्आला व सुब्हानहू ने ये आयत नाज़िल इरमाई :

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِالْفِئَةِ مِنَ  
الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿١٠﴾ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرًا وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ  
قُلُوبُكُمْ ۗ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١١﴾

“जब तुम अपने परवरद्विगार से इरियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी इरियाद कुबूल करते हुवे जवाब दिया के मैं तुम्हारी पे-दर-पे आनेवाले अक उरर इरिशतों से मदद करूँगा, और अल्लाह ने ये काम सिर्फ़ तुम्हारी भुशभबरी और तुम्हारे दिलों को तसल्ली देने के लिये किया, और मदद तो अल्लाह ही के पास है. बिलाशुबा, अल्लाह गालिब है, हिकमतवाला है.” (सूर: अन्फ़ाल, ८:८-१०)

ઈન આયાત મેં અલ્લાહ સુબ્હાનહૂ ને ઉનકે ઈસ્તગાશા કા ઝિક કરકે યે બતાયા હૈ કે ઉસને ફરિશ્તોં કો ભેજકર ઉનકી ફરિયાદ કો કુબૂલ ફરમા લિયા. ફિર યે વઝાહત ફરમાઈ કે યે ઈમદાદ ફરીશ્તોં કી તરફ સે ના થી ઓર અલ્લાહ કી તરફ સે યે ઈમદાદ ફત્હ કી ખુશખબરી ઓર ઉનકે દિલોં કો મુત્મઈન કરને કી ગર્ઝ સે થી. નીઝ ‘અન્-નસૂરુ ઈલ્લા મિન્ ઈન્દલ્લાહ’ કહકર યે વઝાહત ફરમા દી કે યે મદદ સિફ અલ્લાહ કી તરફ સે થી.

નીઝ સૂર: આલે ઈમરાન મેં અલ્લાહ સુબ્હાનહૂ વ ત્આલા ને ફરમાયા :

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ  
تَشْكُرُونَ ﴿١٣﴾

“ઓર અલ્લાહ ને બદ્ર કે મકામ પર તુમ્હારી મદદ કી, જબ કે તુમ કમઝોર થે, લિહાઝા અલ્લાહ સે ડરતે રહો, તાકે તુમ શુક કરો.” (સૂર: આલે ઈમરાન, ૩:૧૨૩)

ઈસ આયત મેં અલ્લાહ ને યે વઝાહત ફરમાઈ કે બદ્ર કે દિન અલ્લાહ હી ઉનકા મદદગાર થા. ઈસસે માલૂમ હુવા કે મુસલમાનો કો અસ્લહા, કુવ્વત ઓર ફરિશ્તોં ને જો મદદ દી થી, યે સબ કુછ મદદ, ખુશખબરી ઓર ઈત્મીનાન કે અસ્બાબ થે, બઝાતે ખૂદ મદદ ના થી, બલકે મદદ તો સિફ અલ્લાહ હી કી તરફ સે થી. ફિર ઈસ મરાસલાનિગાર યા કિસી દૂસરે કે લિયે યે કેસે જાઈઝ હો સકતા હૈ કે વો અપની ફરિયાદ ઓર મદદ કી તલબ કે લિયે નબી ﷺ કી તરફ મુતવજ્જહ હો ઓર અલ્લાહ રબ્બુલ આલમીન સે એ’રાઝ કરે, જો હર ચીઝ કા માલિક ઓર હર ચીઝ પર કાદિર હૈ.

બિલાશુબા યે બદતરીન જિહાલત ઓર બહુત બડા શિર્ક હૈ, લિહાઝા ઈસ મરાસલાનિગાર પર વાજિબ હૈ કે વો અલ્લાહ સુબ્હાનહૂ કે હુઝૂર સચ્ચી તૌબા કરે, જિસકી સુરત યે હૈ કે ઉસસે જો ગુનાહ સરઝદ હુવા ઉસ પર નાદિમ હો ઓર અલ્લાહ કો બુઝૂર્ગ સમઝતે હુવે, ઉસકે લિયે મુખલિસ બનકર, ઉસકે હુકમ કો બજા લાતે હુવે ઓર ઉસને જો ચીઝેં મના કી હૈ ઉસસે બચતે હુવે આઈન્દા એસા કામ કભી ના કરને કા પુખ્ત અહદ કરે. યહી સચ્ચી તૌબા હૈ, ઓર મુઆમલા અગર મખ્લૂક કે હક કા હો તો તૌબા મેં એક ચૌથી બાત ભી ઝરૂરી હૈ કે મુસ્તહિક કો ઉસકા હક વાપિસ કરે યા ઉસસે યે હક માફ કરવાએ. અલ્લાહ તઆલા ને વાદા ફરમાયા હૈ, જૈસા કે ઈરશાદે બારી હૈ :

وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٩﴾

“અય ઈમાનદારોં ! સબકે સબ અલ્લાહ કે હુઝૂર તૌબા કરો, તાકે તુમ ફલાહ પાઓ.” (સૂર: નૂર, ૨૪:૩૧)

और नसारा के बारे में इरमाया :

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٧﴾

“क्या वो अल्लाह के हुज़ूर तौबा नहीं करते और उससे माफ़ी नहीं मांगते ? और अल्लाह तो बक्षनेवाला महरबान है.” (सूर: भाईदा, प:७४)

नीज़ इरमाया :

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿٥٨﴾ يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ﴿٥٩﴾ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٦٠﴾

“और जो लोग अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते, ना ही किसी ऐसी ज़ान को मारते हैं जिसे अल्लाह ने हराम किया है, मगर वो जो उक के साथ हो, और ना वो जिना करते है, और जो शप्स ये काम करे उसे उसके गुनाह का बदला मिलके रहेगा, क्रियामत के दिन उसके लिये अज़ाब दुगना किया जायेगा और वो जलील होकर हमेशा उसमें रहेगा, मगर जो शप्स तौबा करे, ईमान लाये और अच्छे काम करे, तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराईयों को नेकीयों में बदल देगा और अल्लाह बक्षनेवाला महरबान है.” (सूर: कुरकान, २५:६८-७०)

नीज़ इरमाया :

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٦١﴾

“वही तो है जो अपने बंदो की तौबा कुबूल करता ओर बुराईयां माफ़ कर देता है और जो कुछ तुम करते हो उसे वो जानता है.” (सूर: शूरा, ४२:२५)

और नबी ﷺ से दुरस्त तौर पर साबित है के आपने इरमाया :

“ईस्लाम पेहले गुनाहों को मुन्हदिम कर देता है और तौबा साबिका गुनाहों को भत्म कर देती है.”



---

शिक के बहुत बडा पतरा और बहुत गुनाह होने की बिना पर ओर इस तेहरीर से पैदा होनेवाले धोके के भौंफ और अल्लाह और उसके बंदो से भैरप्वाही के जजबे की वजह से मैं ने ये मुप्पसर मगर जामेअ रिसाला लिखा है और मैं अल्लाह अज-व-जल से द्वा करता हूं के वो उसे मुफ्दीद बनाये, और हमारे और सब मुसलमानों के अहवाल को दुरस्त करे और दीन की समज अता फरमाकर हम सब पर अहसान फरमाये, हमें इस पर साबित कदम रभे, हमें और तमाम मुसलमानों को नफ्स की भूराईयों और बद् आ'मालियों से पनाह में रभे, वो इस बात का कारसाज और इस पर कादिर है — **وصلى الله وسلم وبارك على عبده ورسوله نبينا محمد وآله وصحبه** . — (व सल्लल्लाहु व सल्लम व बारिक अला अब्दुल्लू व रसूलुल्लू नबिय्यिना मुहम्मद व आलेहि व-स्हाबिही.)



## दूसरा रिसाला

ये रिसाला अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज की तरफ से हर उस मुसलमान की तरफ है, जो इसे देखे, अल्लाह त्आला मुझे और मुसलमानों को अपने दीन से तमस्सुक और इस पर साबित कदम रहने की तौफ़ीक अता फ़रमाओ.

अस्सलामु अलैकुम, व-रहमतुल्लाह व-बरकातुह.

अम्मा बाद ! मुझे बाज भाईयों ने उन कामों के मुताबिक पूछा, जो बाज ज़ाहिल किया करते हैं.

जैसे अल्लाह सुब्हानहू के धलावा दूसरों को पुकारना और मुश्किल अवकात में उनसे मुआविनत याचना; जैसे जिनों को पुकारना, उनसे फ़रियाह करना, उनके लिये नज़रें और कुरबानी देना और इसी तरह के दूसरे काम करना, जिनमें से एक ये काम है के बाज लोग कहते हैं 'या मुसब्बअतु भुजूवह', जिससे उनकी मुराह जिनों के सात रईस है, याअन्नी अय सात सरदारों ! ये काम करो, उसकी लड़ीयां तोड़ दो, उसका भून पी लो, उसका बहइप लरो, और एक ये बात के बाज लोग कहते हैं 'या जिनुल ज़हीरह' और 'जिनुल अज़' (अय जुहर के वक्त के जिन और अय अज़ के वक्त के जिन ! इलां को पकड़ो.) और ये बात बाज जुनूबी मुमालिक में पाई जाती है और जो बातें इस मुआमले से ज़ा मिलती हैं वो मुरदों को पुकारना है, ज्वाह वो अंबिया हों या वो सालिहीन वगैरह हों, और फ़रिशतोंको पुकारना, और उनसे फ़रियाह करना. ये सब काम और इन जैसे दूसरे काम अक्सर जैसे मुमालिक में वाकेअ हो रहे हैं, जो इन कामों को ज़िहालत की वजह से, और हम अपने से पहले लोगों की तकलीह करते हुवे इन्हें इस्लाम की तरफ़ मन्सूब करते हैं. ऐसी पुकार के सिलसिले में जसा अवकात बाज लोग आराम से ये बात कह देते हैं के जैसे कौल हमारी ज़बानों पर चढ़े हुवे हैं. हम ना तो इसका कसद करते हैं और ना ही ऐसा अकीदा रभते हैं. नीज़ मुजसे ये ली पूछा गया के जो लोग इन आ'माल में मसइफ़ हों उन से रिश्ता करने, कराने, उनकी कुरबानी, उन पर नमाज़े जनाज़ा पढने और उनके पीछे नमाज़ पढने का क्या हुकम है ? नीज़ जो लोग गैब की ज़बरे बतलानेवाले लोगों की तस्दीक करते हैं, जैसे कोई शप्स ये दावा करता है के वो मडज़ मरीज़ के उन कपड़ों को जो उसके जिस्म को छूते हों, जैसे पघडी, पाजामा या हुपट्टा वगैरह से ही मर्ज़ और उसके अस्बाब का पता लगा सकता है, जैसे लोगों के बारे में शरई हुकम क्या है ?

**जवाब :** हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह अकेले को सजावार है और सलातो-सलाम उस पर जिन के बाद कोई नभी आनेवाला नहीं, और उसकी आल पर और अस्लाब पर और उन सब लोगों पर जो ता-रोजे किया मत उनकी राह पर चलें. अम्मा बाद ! अल्लाह सुब्हानहू व त्आला ने तमाम मज्लूक़ात में से जिनों और इन्सानों को सिर्फ़ इस लिये पैदा किया के वो उसकी इबादत करें, सिर्फ़ उसी से हुआ और इरियाद करें और उसीके लिये कुरबानी, नज़रें और बाकी सब इबादत बजा लायें. इसी गर्ज से अल्लाह त्आला ने रसूल भेजे और उन्हें उन्हीं बातों का हुक्म दिया. नीज़ आसमानी किताबें नाज़िल इरमाई, जिनमें सब से बड़ी किताब कुरआने-करीम है, जो इसी यीज़ की वजाहत करती, उस की तरफ़ दा'वत देती और लोगों को अल्लाह के साथ शिर्क और गैरुल्लाह की इबादत से उराती है. यही बात असलुल-उसूल और दीन व मिल्लत की असास है और यही 'ला-इलाह इल्लल्लाह' की शहादत का मफ़हूम है, जिसके माअ्नी ये है के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूदे बर-इक नहीं. गोया ये कलमा गैरुल्लाह की उलुहियत (और यही इबादत है) की नफ़ी करता और बाकी सब मज्लूक़ात को छोडकर अल्लाह अकेले की इबादत को साबित करता है और इस पर किताब व सुन्नत से दलाइल बेसुमार है, मसलन् अल्लाह त्आला इरमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥١﴾

“और मैंने जिनों और इन्सानों को सिर्फ़ इस लिये पैदा किया के वो मेरी इबादत करे.” (सूर: जारियात, ५१:५६)

नीज़ इरमाया :

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ

“और तुम्हारे परवरदिगार ने ये फ़ैसला कर दिया है के तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करना.” (सूर: बनी इसराइल, १७:२३)

नीज़ इरमाया :

وَمَا أَمْرُو إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ

“और इन्हें हुक्म तो यही दिया गया था के इप्लासे अमल के साथ यकसू छोकर उसी की इबादत करें.” (सूर: बय्यिनह, ८८:५)

नीज इरमाया :

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۗ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ ذُخْرَيْنَ ۗ

“और तुम्हारे परवरदिगार ने इरमाया : मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार को कुबूल करूंगा. (नीज इरमाया) जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं, अनकरीब जलील होकर जहन्नम में दाखिल होंगे.” (सूर: मु’मिन, ४०:६०)

नीज इरमाया :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۗ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۗ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝

“जब मेरे बंदे आप से मेरे मुताल्लिक पूछें, तो आप कल दिजिये के मैं करीब हूँ जब कोई पुकारनेवाला मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी पुकार को कुबूल करता हूँ.”

(सूर: बकरल, २:१८६)

गोया इन आयात में अल्लाह सुब्धानलू ने ये वजाहत इरमाई के उसने जिनों और इन्सानों को अपनी इबादत के लिये पैदा किया है और ये कैसेला कर दिया है के उसके सिवा किसी की इबादत ना की जाओ और ‘अक्सा अम्र’ और ‘अवसा’ के माअनी ये है के अल्लाह सुब्धानलू ने कुरआन की मुहकम आयात में और रसूल ﷺ की जभान पर अपने बंदों को ये ताकीदी हुकम दिया है के वो अपने परवरदिगार के इलावा किसी की इबादत ना करें और ये भी वजाहत इरमा दी के हुआ बहुत बडी इबादत है, जो इससे तकब्बुर करे, आग में दाखिल होगा और अपने बंदो को हुकम दिया के वो उस अकेले को पुकारें और बताया के वो करीब है, उनकी पुकार का जवाब देता है, लिहाजा तमाम बंदो पर वाजिब है के सिर्फ उसी को पुकारे, क्यूं के पुकार इबादत की वो किस्म है, जिसके लिये उन्हें पैदा किया गया और इसका हुकम दिया गया है. युनांये अल्लाह अज-व-जल इरमाता है :

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۗ لَا شَرِيكَ لَهُ ۗ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۝

“आप कल दिजिये के मेरी नमाज, मेरी कुरबानी, मेरी जिंदगी और मेरी मौत



सब कुछ अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये है. उसका कोई शरीक नहीं, मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है और मैं पेहला इरमाबरदार हूँ.” (सूर: अन्आम, ६:१६२)

अल्लाह त्आला ने अपने नबी ﷺ को हुक्म दिया के वो लोगों को बतला दे के मेरी नमाज, मेरी कुरबानी, मेरी जिंदगी और मेरी मौत सब कुछ उस अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिये है, जिसका कोई शरीक नहीं. गोया जिसने गैरुल्लाह के लिये कुरबानी की उसने अल्लाह के साथ जैसे ही शिर्क किया जैसे गैरुल्लाह के लिये नमाज अदा की. इस लिये के अल्लाह सुब्हानहू ने नमाज और कुरबानी का एकट्ठा जिक्र किया और ये बतला दिया के ये दोनों चीजें उस अकेले अल्लाह के लिये हैं, जिसका कोई शरीक नहीं. खिदाज जिस शप्स ने गैरुल्लाह, मसलन् जिन्नों, इरिशतों, मुरदों या किसी दूसरे के लिये कुरबानी की, ताके वो उसके जरिये उनका कुर्ब हासिल करे, वो जैसे हि है जैसे उसने गैरुल्लाह के लिये नमाज पढी, और सहीह हदीस में है के नबी ﷺ ने इरमाया :

“जो गैरुल्लाह के लिये कुरबानी करे उस पर अल्लाह ने ला'नत की है.”

और इमाम अहमद ने हसन सनद से तारिक बिन शिदाब رضي الله عنه से रिवायत की है, वो कहते हैं के नबी ﷺ ने इरमाया :

“दो आदमी अक ऐसी कौम पर गुजरे, जिनका अक भूत था और जब तक कोई राहगीर उसके लिये कोई चीज कुरबानी ना देता ये उसे आगे नहीं जाने देते थे. उन लोगों ने इन दोनों में से अक को कहा :कुछ कुरबानी करो. उसने जवाब दिया : मेरे पास कुरबानी करने की कोई चीज नहीं. उन्होंने कहा के कुरबानी दो, प्वाल अक मक़्भी की हो. युनांये उसने मक़्भी की कुरबानी दी, तो उन लोगों ने उसकी राह छोड दी और ये शप्स जहन्नम में दाखिल हुवा. फिर उन्होंने दूसरे से भी कहा के कुरबानी कर. वो कहने लगा : मैं तो अल्लाह अज-व-जल के इलावा किसी के लिये कुछ भी कुरबानी न दूंगा. युनांये उन्होंने उसकी गरदन उडा दी और ये शप्स जन्नत में दाखिल हुवा.”

अब देखिये, अगर अक शप्स भूत के तर्कुब के लिये अक मक़्भी जैसी चीज की कुरबानी से ऐसा मुश्रिक हो जाता है के दोज्भ में दाखिल होने का मुस्तलिक करार पाये, तो उस शप्स का क्या हाल होगा जो जिन्नों, इरिशतों और अवलिया को पुकारता हो, उनसे इरियाद करता हो और उनसे तर्कुब के लिये कुरबानी करता हो, इस उम्मीद पर के वो उसके माल की लिफ़ाजत करेंगे या उसके मरीज को शिफ़ा देंगे या उसके जानवर और भेती सलामत रहेंगे, या वो ये काम जिन्नों के शर वगैरह से उरते हुवे करता हो, तो ये शप्स और इस तरह के लोग उस शप्स नी निस्बत मुश्रिक होने या दोज्भ में दाखिल होने के बहरजह उला मुस्तलिक हैं. अक ने भूत के लिये मक़्भी की कुरबानी दी थी और इस बारे में अल्लाह त्आला का ये कौल भी वारिद है :

فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۗ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۗ وَالَّذِينَ  
اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ ۗ  
إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ  
كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣٠﴾

“तो अल्लाह की ध्यानाएत करो, याअनी (शिक से) आलिस करके. देओ, ध्यानाएत आलिसतन् अल्लाह डी के लिये है ओर जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज बना रभे हैं (उनके मुताल्लिक कहते हैं के) हम उनकी ध्यानाएत धस लिये करते हैं के वो हमें अल्लाह का मुकर्रब बना दें. तो जिन बातों में ये धम्मिलाइ करते हैं अल्लाह उनमें उन चीजों का फैसला कर देगा. बिलाशुबा अल्लाह उस शप्स को लिदायत नहीं देता, जो जूटा और नाशुका हो.” (सूर: जुमर, ३८:२-३)

नीज इरमाया :

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَنْصُرُهُمْ وَأَلَّا يُفَعَّلُوا هُوَ آءِ  
شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۗ قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي  
الْأَرْضِ ۗ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

“ये लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीजों की पूजा करते हैं, जो ना उनका कुछ बिगाड सकती है और ना बला कर सकती हैं, और कहते हैं के अल्लाह के यहां ये हमारे सिफारिशी होंगे. आप कह दिजिये : क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात बतलाते हो, जिसका वजूद ना आसमानों में मालुम होता है, ना जमीन में ? वो पाक है और जो कुछ वो शिक करते हैं उससे बहुत बलंद है.” (सूर: यूनस, १०:१८)

धन दो आयात में अल्लाह त्आला ने ये बतला दिया के मुश्रिकों ने अल्लाह को छोडकर मप्लूक में से औरों को कारसाज बना रभा है, जो उनकी दुआ, भौइ, उम्मीद, नज़र और कुरबानी वगैरह के साथ ध्यानाएत करते हैं और ये समझते हैं के ये कारसाज उन्हें अल्लाह के नजदीक कर सकते हैं और उसके यहां उनकी सिफारिश कर सकते हैं, तो अल्लाह सुबखानहू ने उन्हें जूटा करार दिया और उनके धस बातिल काम की वजाहत इरमाई और उन्हें जूटे, कुइफार और मुश्रिकीन का नाम दिया. नीज अपनी जात को उनके शिक से मुनज़्जल किया और इरमाया :

سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

“अल्लाह तआला पाक और उन चीजों से बलंद है जो वो शिर्क करते हैं.”

(सूर: यूनुस, १०:१८)

ईससे मालूम हुवा के जिस शप्स ने किसी इरिश्ता या नबी या जिन्न या दरभ या पत्थर को कारसाज बनाया, जिसे वो अल्लाह के साथ पुकारता है, उससे इरियाह करता और नज़र और कुरबानी के जरिये उसका तकरुब याहता है और अल्लाह के यहां उसकी शफ़ाअत और तकरुब की उम्मीद रખता है, या मरीज़ की शिफ़ा की या माल की खिफ़ाअत की या किसी गार्हब की सलामती की या औसी ही कोई दूसरी उम्मीद रખता है, वो उस बडे शिर्क और सप्त मआसियत में जा पडा, जिसके मुताल्लिक अल्लाह तआला इरमाता है :

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٧﴾

“अल्लाह उस गुनाह को नहीं बक्षेगा के उसके साथ किसीको शरीक बनाया जाओ और बाकी गुनाह, जिसे याहे बक्ष देगा और जिस शप्स ने अल्लाह के साथ शरीक बनाया उसने बहुत बडा भोडतान बांधा.” (सूर: निसा, ४:४८)

नीज़ इरमाया :

إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۗ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٤٧﴾

“जो शप्स अल्लाह के साथ शरीक करे, अल्लाह ने उस पर जन्नत को हराम कर दिया है. उसका ठिकाना जहन्नम है ओर ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं.”

(सूर: माईदा, ५:७२)

और शफ़ाअत तो कियामत के दिन सिई अेहले तौहीद व ईप्लास को नसीब होगी, अेहले शिर्क को नहीं; जैसा के नबी ﷺ ने उस शप्स को जवाब दिया, जिसने ये पूछा था : अय अल्लाह के रसूल ! आप की शफ़ाअत का सब से ज़्यादा खिस्सेदार कौन होगा ? तो आप ﷺ ने इरमाया : “जिसने फुलूसे दिल से ला-ईलाह ईल्लल्लाह कडा.”

नीज़ आप ﷺ ने इरमाया :

“हर नबी के लिये अेक हुआअे मुस्तजाब है और हर नबी अपनी-अपनी ये हुआ कर चुका और मैंने ये हुआ रोजे कियामत अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये

महझूळ कर रभी है. अगर अल्लाह ने याहा तो ये हुआ मेरी उम्मत के हर उस शप्स को पहुंचेगी, जो इस हाल में मरा के उसने अल्लाह के साथी शिर्क ना किया हो.”

पहले मुश्रिकीन ये ईमान रभते थे के अल्लाह ही उनका परवरद्विगार और ખालिक व राजीक है, अलभता उन्होंने ने अंबिया, अवलिया, इरिशतों और दरभों और पत्थरों वगैरह से उम्मीद वाबिस्ता कर रभी थी के वो अल्लाह के यहां उनकी सिफारिश करेंगे और अल्लाह के करीब कर देंगे, जैसा के पहले आयात में ये मजमून गुजर चुका है. लेकिन उनका ये उज़र ना तो अल्लाह त्आला कुबूल करेगा और ना ही रसूलुल्लाह ﷺ कुबूल करेंगे, बल्के अल्लाह त्आला ने अपनी किताबे-अजीम में उन पर गिरफ्त इरमाई और उन्हें कुफ़र, मुश्रिकीन का नाम दिया, ओर उनके इस गुमाने-बातिल को जूटा करार दिया के उनके ये मा'बूद उनकी शफ़ाअत करेंगे और उन्हें अल्लाह के करीब कर देंगे.

और रसूलुल्लाह ﷺ ने इसी शिर्क की वजह से इन लोगों से जंग की, यहां तक के इबादत को अमलन् अल्लाह अकेले के लिये खालिस बना दिया, जैसा के अल्लाह त्आला ने इरमाया है :

وَقْتُلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةً وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ

“और उन से जंग करो, यहां तक के इत्ना बाकी ना रहे और दीन पूरे का पूरा अल्लाह ही के लिये हो जाये.” (सूर: अकरह, २:१८३)

रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया :

“मुझे ये हुक्म दिया गया है के मैं लोगों से जंग करूं, यहां तक के वो ये शहादत दें के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है और नमाज काईम करे और जकात अदा करें ओर ईर जब वो ये काम करने लगे, तो उन्होंने ने मुज से अपने खून और माल महझूळ करी लिये. मगर जो कुछ अल्लाह का हक हो और उनका हिसाब तो अल्लाह के जिम्मे है.”

और आप ﷺ के कौल ‘हत्ता यशहदू अल्लाहलाह इल्लल्लाह’ का माअनी ये है के वो अल्लाह के सिवा हर चीज को छोडकर इबादत को उसी के लिये खालिस करें, जब के मुश्रिकीन जिम्नों से उरते और उनसे पनाह मांगते थे, तो अल्लाह त्आला ने इस बारे में ये आयत नाजिल इरमाई :

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا



“और ये के बाज बनी आदम बाज जिनात की पनाह पकडा करते थे, जिससे उनकी सरकशी और बढ गई थी.” (सूर: जिन्न, ७२:६)

ईसकी तइसीर करते हुवे, पेहली तइसीर ईसका माअूनी डरना और भौइजदा होना बतलाते है, क्यूं के जिन्नो ने जब ये देखा के ईन्सान उनकी पनाह तलब करते है, तो वो अपने आप को बहुत बडा समजने लगे थे और उनमें तकब्बुर पैदा हो गया था. अब वो ईन्सानों को और भी डराने और भौइजदा करने लगे, यहां तक के बहुत से लोगों ने उनकी ईबाहत और उनकी तरई पनाह लेना शुरू कर दी, जब के अल्लाह ने मुसलमानों को ईसका मुतबाहिल ये बतलाया के वो अल्लाह सुब्धानहू और उसके कलमाते ताम से पनाह तलब करें. ईसी बारे में अल्लाह त्आला ने ये आयत नाजिल इरमाई :

وَأَمَّا يُنْزَعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠﴾

“और अगर शैतान की तरई से तुम्हारे दिल में किसी किस्म का वसूवसा पैदा हो तो अल्लाह से पनाह मांगो. बिलाशुबा वो सुननेवाला, जाननेवाला है.”

(सूर: आ'राइ, ७:२००)

नीज इरमाया :

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾

“आप कडिये के मैं सुब्द के मालिक की पनाह मांगता हूँ.” (सूर: इलक, ११३:१)

और,

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿٢﴾

“आप कडिये के मैं लोगों के परवरदिगार की पनाह मांगता हूँ.”

(सूर: नास, ११४:१)

और, नबी ﷺ से सहीह तौर पर साबित है के आप ﷺ ने इरमाया :

“जो शप्स किसी मकाम पर उतरे तो ये हुआ पढे -

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ حَتَّى يَرْتَجِلَ  
مِنْ مَنزِلِهِ ذَلِكَ.

‘अठिळु भिकलिमातिल्लाहितामाति भिन शरि मा ञलक लम यजुरेडू शयउनु, लता यरतडील भिन मुनज्जलडू आलिक’ (अल्लाह जे कुछ बूराई तुने पैदा की है, में तेरे कलमाते ताम के साथ उससे पनाह मांगता हूँ.)

तो उसे कोई चीज गजंड (नुकसान) ना पहुंचायेगी, यहां तक के वो उस मकाम से कूच कर जायें.

और जे शप्स निजत का तालिब हो और अपने दीन की डिफेंड और ञई और जली किस्म के शिर्क से सलामती की रगबत रजता हो उसे साबिका आयात व अलादीस से ये बात मालूम हो जायेगी के मज्लूकत में से मुरदों, इरिशतों और जित्रों वगैरह से रिश्ता जोडना, उनसे दुआ करना और उनसे पनाह तलब करना वगैरह-वगैरह दौरे जालिलियत के मुश्रिकों के काम हैं, और यही बातें अल्लाह के साथ बहतरीन शिर्क हैं. लिहाजा उन्हें छोडना, उनसे बचना, अक-दूसरे को ये काम छोडने की वसियत करना और जे शप्स ऐसे काम करे, उस पर गिरफ्त करना वाजिब है, और जे शप्स ऐसे शिर्किया आ’माल की वजह से लोगों में मशहूर हो, ना उससे रिश्ता करना जाईज है, ना उसका जभीला ञाना, ना उस पर नमाजे ञनाजा पढना और ना ही उसके पीछे नमाज अदा करना जाईज है, यहां तक के वो अल्लाह सुब्हानहू के हुजूर इन कामों से तौबा का अलान करे, और दुआ व ईबाहत को अल्लाह अकेले के लिये ञालिस करे, और दुआ ईबाहत ही है, बल्के उसका मज्ज है, जैसा के नबी ﷺ ने इरमाया : “दुआ ही ईबाहत है” और दूसरी रिवायत के अल्फाज ये है – “दुआ ईबाहत का मज्ज है.”

और अल्लाह त्आला इरमाता है :

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوْا ۗ وَلَا مَآةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ  
 وَلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوْا ۗ وَلَعَبْدٌ  
 مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ ۗ وَلَوْ اَعْجَبَكُمْ ۗ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۗ  
 وَاللّٰهُ يَدْعُوْا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۗ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ  
 لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٣١﴾

“और मुश्रिक औरतों से निकाह ना करो, यहां तक के वो ईमान ले आयें और मोमिन लोंडी आजाह मुश्रिका से बेहतर है, ञ्वाल वो तुम्हें त्बली ही लगे, और मुश्रिक मर्दों से निकाह ना करो, यहां तक के वो ईमान ले आयें और मोमिन

गुलाम मुश्रिक आजाद से बेहतर है, अगर ये वो तुम्हें भला ही लगे. ये लोग दोज़्ख की दा'वत देते हैं, जब के अल्लाह त्आला जन्नत की तरफ़ और अपने ईज़्ज़न (हुकूम) से मगफ़िरत की तरफ़ बुलाता है, और अल्लाह त्आला अपनी आयात को फ़ोलकर बतलाता है, ताके वो लोग नसीहत छसिल करे.”

(सूर: अकरह, २:२२१)

और अल्लाह त्आला ने मुसलमानों को भूतों, जिन्नों और इरिशतों वगैरह की पूजारी मुश्रिक औरतों से निकाल करने से मना कर दिया, यहाँ तक के वो फ़ालिसतन् अल्लाह अकेले की ईबादत करें और इस बारे में जो कुछ रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया है उसकी तस्दीक करें ओर उनके रास्ते की ईत्तिबा करें. इसी तरह मुसलमान औरतों से मुश्रिकों की शादी से भी मना इरमा दिया, यहाँ तक के वो फ़ालिसतन् अल्लाह अकेले की ईबादत करें और रसूलुल्लाह ﷺ की तस्दीक और आप ﷺ की ईत्तिबा करें. नीज़ अल्लाह त्आला व सुब्छानहू ने ये भी बतलाया के मोमिन लोंडी, आजाद मुश्रिक से बेहतर है, अगर ये जो उसकी तरफ़ देजे उसके जमाल की वजह से वो उसे अच्छी लगे या उसकी बात सुने तो वो भली मालूम हो और मोमिन गुलाम, आजाद मुश्रिक से बेहतर है, अगर ये उसे देजनेवाले और सुननेवाले को मुश्रिक का हुस्न और इसाहत और शुजाअत वगैरह अच्छे लगे. फिर इस तर्फ़सील की वजह अल्लाह सुब्छानहू ने अपने इस कौल **أُولَئِكَ يُدْعَوْنَ إِلَى الْغَايِبَاتِ** से वाजेह इरमाया है — याअूनी इस लिये के ये मुश्रिक मर्द और मुश्रिक औरतें जैसे लोग हैं, जो अपने अकवाल और अइआल और सीरत व अफ़्लाक से जहन्नम की तरफ़ दा'वत देनेवाले है, जब के मोमिन मर्द और मोमिन औरतें अपने अफ़्लाक, आ'माल और सीरत से जन्नत की तरफ़ बुलानेवाले हैं. लिहाज़ा ये दोनों किस्म के लोग अेक जैसे कैसे हो सकते हैं, और अल्लाह अज़-व-जल ने मुनाफ़िकों के बारे में इरमाया है :

**وَلَا تُصَلِّ عَلَىٰ أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّا تَأْتِيكَ بِهِ وَلَا تَقُمْ عَلَىٰ قَبْرِهِ ۗ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَأْتُوا وَهُمْ فَسِقُونَ ﴿٥٧﴾**

“अगर उनमें से कोई मर जाये, तो कभी उसकी नमाज़े जनाज़ा ना पढना, ना ही उसकी कब्र पर (दुआ के लिये) खड़ा होना, क्यूं के इन लोगों ने अल्लाह ओर उसके रसूल से कुफ़ किया था और इस हाल में मरे, जब के वो फ़ासिक थे.” (सूर: तौबा, ८:८४)

इस आयते-करीमा में अल्लाह त्आला ने ये वज़ाहत इरमाई है के मुनाफ़िक और काफ़िर दोनों पर, अल्लाह उसके रसूल से उनके कुफ़ की बिना पर नमाज़े जनाज़ा

ना पढी जाओ, ईसी तरह ना उनके पीछे नमाज अदा की जाओ, ना ही उन्हें मुसलमानों का ईमाम बनाया जाओ, क्यूं के ये दोनों काफ़िर हैं, उनमें अमानत मफ़कूद है (यानि अमानत पाई नहीं जाती), उनके और मुसलमानों के दरमियान बड़ी दुश्मनी है ओर ईस लिये भी के ना उनकी नमाज है और ना ईबादत है, क्यूं के शिर्क ऐसी चीज़ है, जिसकी मौजूदगी में कोई अमल बाकी नहीं रहता. हम अल्लाह से दूआ करते हैं के वो हमें ईससे आफ़ियत में रहे. नीज़ अल्लाह ने मुरदार की हुरमत और मुश्रिकों के ज़बीहे के बारे में फ़रमाया :

وَلَا تَأْكُلُوا حِمْلًا يَدُ كَرِ اسْمِ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهُ لَفِسْقٌ ۙ وَاِنَّ الشّٰیطٰنِ  
لِیُوْحُوْنَ اِلٰی اَوْلٰیئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۗ وَاِنْ اَطَعْتُمْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ۝

“और जिस चीज़ पर अल्लाह का नाम ना लिया जाओ, उसे मत खाव के उसका खाना गुनाह है, और शैतान लोग अपने दोस्तों के दिलों में ये बात डालते हैं के तुमसे ज़घडा करें, और अगर तुम उनके कलने पर चले तो बैशक तुम भी मुश्रिक हुवे.”

(सूर: अन्आम, ६:१२१)

अल्लाह अज़-व-जल ने मुसलमानों को मुरदार और मुश्रिकों का ज़बीहा खाने से मना कर दिया, क्यूं के वो नजस है. लिहाज़ा उनका ज़बीहा मुरदार के हुक्म में डोगा, अगर ये उस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो, क्यूं के मुश्रिक का ‘बिस्मिल्लाह’ कलना बातिल है, जिसका कोई असर नहीं, क्यूं के तस्मिया ईबादत है और शिर्क ईबादत को बरबाद कर देता और बातिल बना देता है, यहां तक के मुश्रिक अल्लाह के हुज़ूर तोबा ना करे. अल्लाह त्आला ने सिर्फ़ अहले किताब के खाने को दर्जे ज़ेल आयत की रू से मुबाह किया है :

وَطَعَامُ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۗ

“अहले किताब का खाना तुम्हारे लिये हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिये हलाल है.” (सूर: माईदा, ५:५)

क्यूं के अहले किताब आसमानी दीन से अपनी निस्बत करते थे ओर ये समजते थे के वो हज़रत मूसा عليه السلام और हज़रत ईसा عليه السلام के पैरुकार है, डालां के वो ईस मुआमले में जूटे थे, क्यूं के अल्लाह ने उनके दीन को मन्सूख कर दिया और मुहम्मद ﷺ को तमाम लोगों की तरफ़ मबउस फ़रमाकर उसे बातिल कर दिया है. लेकिन अल्लाह



अज-व-जल ने अहले किताब का पाना और उनकी औरतें हमारे लिये हलाल कर दी हैं, जिसकी छिकमते बालिगा की और उसके असरार की जो इस सिलसिले में मलहूज रभे गये हैं अहले एल्म ने वजाहत कर दी है. बज्जिलाह मुशरिफों के, जो आस्तानों और मुरदा नबीयों और वलीयों वगैरह के पूजारी होते हैं, जिनके दीन की ना कोई असल है और ना इसमें कुछ शुभा है, बल्के वो बातिल है. इसी बिना पर मुशरिफों का जभीहा मुरदार करार दिया गया, जिसका पाना ज़ाहज़ नहीं.

रही उस शप्स की बात, जो किसी को यूँ कहे : तुझे जिन्न लगे, तुझे जिन्न पकडे, तुज पर जिन्न तारी हो जाये, या इस किस्म के दूसरे अकवाल, तो ये गाली-गलौय के बाब से हैं, और ये भी गाली-गलौय के दूसरे अल्फ़ाज की तरह मुसलमानों के लिये नाजाहज़ है. ता-हम ये शिर्क के बाब से नहीं, एल्ला ये के काहल ये अकीदा रभता हो के जिन्न अल्लाह त्आला के एज़्ज़न और मशियत के बगैर लोगों में तसरुफ़ कर सकते हैं, जो शप्स जिन्नों या मप्लूक़ात में से किसी और के बारे में ये अ'तिकाह रभे, वो इस अ'तिकाह की बिना पर काहिर है, क्यूँ के अल्लाह सुब्बानहू व त्आला ही हर चीज़ का मालिक और हर चीज़ पर कादीर है. वही नफ़ा देनेवाला और नुकसान पहुँचानेवाला है. कोई चीज़ उसके एज़्ज़न, उसकी मशियत और साबिका तकदीर के बगैर वजूह में नहीं आ सकती, जैसा के अल्लाह अज-व-जल ने अपने नबी ﷺ को ये हुक्म दिया के वो लोगों को इस असले अज़ीम की ખुशખबर दे दे. इरमाया :

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ  
الْغَيْبِ لَا سَتَكُنْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۗ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۗ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ  
وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٧﴾

“आप कल दिजिये के मैं तो अपने नफ़ा-नुकसान का मालिक नहीं, मगर जो कुछ अल्लाह याहे और अगर मैं गैब जानता होता, तो मैं बहुत सी त्मलाहियां एकट्ठी कर लेता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ ना पहुँचती. मैं तो सिर्फ़ डरानेवाला और ખुशખबरी देनेवाला हूँ उन लोगों के लिये जो एहमान लाते हैं.” (सूर: आ'राफ़, ७:१८८)

इर जब तमाम मप्लूक़ के सरदार ओर एन सब से अहज़ल ﷺ का ये डाल हो के वो अपने आप के भी नफ़ा-नुकसान के मालिक ना हों, मगर जो कुछ अल्लाह याहे, तो इर मप्लूक़ में से किसी दूसरे का क्या डाल होगा और इस मज़मून की आयात बहुत है.

રહા પેશીનગોઈ કરનેવાલોં, શોબદાબાઝોં ઓર નજૂમીયોં ઓર ઐસે હી દૂસરે લોગોં કે મુતાલ્લિક સવાલ, જો ગૈબ કી ખબરેં બતલાતે રહતે હેં, તો યે ઐસી બૂરી બાત હે, જો જાઈઝ નહીં ઓર ઐસે લોગોં કી તસ્દીક કરના તો ઓર ભી સખત ઓર કાબિલે ગિરફત બાત હે, બલકે કુફ હી કી કિસ્મ હે, ક્યૂં કે નબી ﷺ ને ફરમાયા :

“જિસ શખ્સ ને કિસી પેશીનગો કે યહાં આકર કિસી ચીઝ કે મુતાલ્લિક પૂછા ઉસકી ચાલીસ દિન કી નમાઝ કુબૂલ ના હોગી.”

ઇસે મુસ્લિમ ને અપની સહીહ મેં રિવાયત કિયા હે, નીઝ દર્જે ઝેલ હદીસ કો ભી અપની સહીહ મેં મુઆવિયા બિન અલ-હકમ અલ-સલમા સે રિવાયત કિયા કે નબી ﷺ ને કાહિનોં કે પાસ આને ઓર ઉનસે પૂછને સે મના ફરમાયા હે, ઓર અબૂ દાઉદ, તિરમિઝી, નસાઈ, ઇબ્ને માજા મેં હે કે અલ્લાહ કે રસૂલ ﷺ ને ફરમાયા :

“જો શખ્સ કિસી કાહિન કે યહાં આયા ઓર ઇસ બાત કો સચ સમજા જો કાહિન કહ રહા હે, તો ઉસને ઉસ ચીઝ કા કુફ કિયા, જો મુહમ્મદ ﷺ પર નાઝિલ હુઈ હે.”

ઓર ઇસ માઅની કી અહાદીસ બહુત હે. લિહાઝા મુસલમાનોં પર વાજિબ હે કે કાહિનોં, અરાફોં ઓર બાકી હર કિસ્મ કે પેશીનગોઈ કરનેવાલે લોગોં સે પૂછને સે બચેં, જિનકા શુગલ હી ગૈબ કી ખબરેં બતલાના ઓર મુસલમાનોં કો ચકમા દેના હે, ખ્વાહ યે ચકમા તિબ કે નામ સે હો યા કિસી ઓર નામ સે, જૈસા કે ઇન બાતોં સે રસૂલુલ્લાહ ﷺ કા ઉસકો ન કરનેકા હુક્મ ઓર ઉનસે તહઝીર પેહલે ગુઝર ચુકી હે. ફિર ઇસ સિલસિલે મેં યે બાત ભી શામિલ હો જાતી હે, જો બાઝ લોગ તિબ કે નામ પર ગૈબી ઉમૂર કે જાનને કા દાવા કરતે હેં. જબ વો કિસી મરીઝ કી પઘડી યા કિસી મરીઝ કા દૂપટ્ટા યા ઐસે હી કોઈ દૂસરા કપડા સૂંઘતે હેં, તો કહતે હેં કે ઇસ મરીઝ ને યા ઇસ મરીઝા ને યે કામ કિયા થા યા વો કામ કિયા થા ઓર યે ઐસે ગૈબી ઉમૂર હોતે હેં, જિનકા મરીઝ કે અમામા યા કોઈ દૂસરી ચીઝ સૂંઘને સે પતા નહીં ચલ સકતા, ના હી ઇસ પર કોઈ દલીલ હોતી હે. ઇસસે ઉનકા મક્સદ સિફ અવામુન્નાસ કો ચકમા દેના હોતા હે, યહાં તક કે લોગ યે કહને લગેં કે ફલાં શખ્સ તિબ કા બડા માહિર હે ઓર મર્ઝ કી અક્સામ ઓર ઉસકે અસ્બાબ કા બહુત માહિર હે, ઓર બસા અવકાત ઐસે લોગ કોઈ દવાઈ ભી દે દેતે હેં. ફિર અગર અલ્લાહ કી તકદીર કે મુતાબિક મરીઝ કો શિફા હો જાએ, તો લોગ યે સમઝને લગતે હેં કે યે ઉસ દવાઈ કા અસર હે. હાલાં કે બસા અવકાત ઇન મર્ઝ કે અસ્બાબ હી બાઝ જિન્નોં ઓર શૈતાનોં કે પૈદાકર્દા હોતે હેં, જો ઇસ તિબ કે મુદ્દઈ કી ખિદમત કરતે હેં ઓર બાઝ ઐસી ગૈબ કી બાતેં ઉસે બતલા દેતે હેં,

जिनकी उन्हें खबर होती है. मरीज इन बातों पर अतिमाह कर लेता है और जिन्न और शयातीन इस बात पर राजी होते हैं के उनकी इबादत की जाये जो उनके मुनासिब हो. वो मरीज से उठ जाते हैं और इस यकमे से जो इजा मरीज को दे रहे थे उसे छोड़ देते थे और ये बात जिन्न और शयातीन के मुताद्विक और उन लोगों के मुताद्विक, जो उनसे बिदमत लेते हैं, मा'रुफ है.

लिहाजा मुसलमानों पर वाजिब है के वो ऐसी बातों से भूद भी बयें और दूसरों को छोड़ने की ताकीद करें. सिर्फ अल्लाह सुब्बानहू पर अतिमाह करें और हर मुआमले में इसी पर तवक्कुल करें अलबत्ता शरई किस्म के दम, जाण, जाईज अदविया और डाक्टरों से इलाज कराने में कोई हरज नहीं, जो शुआओं वगैरह से मरीज की तशहीस और इलाज करते हैं, और डिस्सी और अक्ली अस्बाब से उसके मर्ज की तेहकीक करते हैं. युनांये नबी ﷺ से साबित है के आप ने इरमाया :

“अल्लाह तूआला ने ऐसी कोई बीमारी पैदा नहीं की, जिसकी दवा भी पैदा न की हो. जिसने इस दवा को जान लिया और जिसने ना जाना सो ना जाना. (याअ्नी वो शिफा की दवा किसी को मालूम हो सके या ना हो सके.)”

नीज आप ﷺ ने इरमाया :

“हर बीमारी की दवा है. जब वो दवा इस बीमारी को रास आ जाये, तो मरीज अल्लाह के हुक्म से सिहतयाब हो जाता है.”

नीज आप ﷺ ने इरमाया :

“अय अल्लाह के बंदो ! इलाज किया करो, लेकिन हराम चीज से इलाज ना करो.”

और इस मजमून की बहुत सी अहादीस हैं. लिहाजा हम अल्लाह से हुआ करते हैं के वो सब मुसलमानों के अहवाल की इस्लाह इरमाये. उनके दिलों और उनके बदनो को हर बुराई से शिफा बक्षे और इद्दायत पर इकट्ठा करे, और हमें और उन को इत्नीयों की गुमराहियों से ओर शैतान और उसके दोस्तों की इताअत से अपनी पनाह में रभें, क्यूं के वो हर चीज पर कादिर है और गुनाह से बचने और नेकी करने की तौहीक उसी अल्लाह बुर्रुग व भरतर से ही होती है — व सल्लल्लाहु व सल्लम व बारिक अला अब्दुल्लू व रसूलुल्लू नबिख्यिना मुहम्मद व आलेहि व-सलामिही.





## तीसरा रिसाला

अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज की तरफ से बिरादरे मुकर्रम.....  
के नाम.

अल्लाह आपको ललाई की तौफीक दे, आमीन.

अस्सलामु अलैकुम, व-रहमतुल्लाह व-बरकातुह.

अम्मा बाद ! आपका गिरामी नामा मोसूल हुवा. अल्लाह आपको अपनी छिदायत से हमकिनार करे. जो कुछ ईस जत से मालूम होता है वो ये है के आप के मुल्क में कुछ ऐसे लोग हैं, जो ऐसे अवराद व वजाईफ पढते हैं, जिनकी अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी. कुछ उनमें से बिदईया हैं और कुछ शिर्किया हैं. ये लोग इन अवराद को छरत अली बिन अभी तालिब رضي الله عنه वगैरह की तरफ मन्सूब करते हैं और इन अवराद को मजालिसे जिंक में या मसाजिद में नमाजे मगरिब के बाद पढते हैं और समजते हैं के इन अवरा से अल्लाह का कुर्ब हासिल होगा, जैसे उनका कौल है :

“अय अल्लाह के आदमियो ! अल्लाह के डक के साथ और अल्लाह की मदद से हमारी मदद करो और अल्लाह के साथ हमारे महरबान बन जाओ.”

और उनका ये कौल :

“अय अकताब आउर अय अवताद और अय सरदारो ! हमारे मुआमले में मदद देनेवालों ! हमारी मदद करो और अल्लाह के लिये शफाअत करो. ये तुम्हारा बंधा पडा है ओर आप के दरवाजे पर मो'तकिफ है. अपनी तकसीर से जाईफ है. अय अल्लाह के रसूल ! हमारी इरियाद को पहुंयो. आप के ईलावा में किस के पास जाऊँ और आप से ही मतलब हासिल होता है और आप छरत हमजह सैयदुश-शोहदा के वसीले से बेहतर अहलुल्लाह है और आप में से कौन हमारा मददगार होगा. अय अल्लाह के रसूल ! हमारी इरियाद को पहुंयो.”

नीज उनका कौल :

“अय अल्लाह ! उस शप्स पर रहमत भेज, जिसे तूने अपने जबरती असरार के फाडने और हमानी अनवार के अलग-अलग होने का सबब बनाया. तू वो



રબ્બાની દરગાર સે નાઈબ ઓર તેરે અસરાર કા ખલીફા બન ગયા...”

ઔર આપ યે વઝાહત યાહતે હૈં કે ઈનમૈં સે કૌન સા વિદ્ બિદઅત હૈ ઔર કૌન સા શિર્ક? ઔર કયા ઐસે ઈમામ કે પીછે નમાઝ દુરસ્ત હૈ જો ઈસ કિસ્મ કી દુઆ કરતા હો, જિસકે મુતાલ્લિક સબ કુછ માલૂમ હૈ ?

**જવાબ :** અલહમ્દુલિલ્લાહિ વહદહૂ, વસ્સલાતુ વસ્સલામુ અલા મિન્ લા નબિય્યિ બાઅ્દ વ અલા આલિહિ વસ્-હાબિહિ વ મિન ઈહ્તદા બઅ્દહૂ ઈલા યવ્મિદ્દીન.

માલૂમ હોના યાહિયે ઔર અલ્લાહ આપ કો ઈસકી તૌફીક અતા ફરમાએ કે અલ્લાહ ને ખલ્કત કો સિર્ફ ઈસ લિયે પૈદા કિયા ઔર રસૂલોં કો, ઉન પર સલાતો-સલામ હો, સિર્ફ ઈસ લિયે ભેજા કે અલ્લાહ અકેલે કી ઈબાદત કી જાએ, જિસકા મખ્લૂકાત મૈં સે કોઈ ભી શરીક નહીં, જૈસે કે અલ્લાહ ત્આલા ને ફરમાયા :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥١﴾

“ઔર મૈંને જિન્નોં ઔર ઈન્સાનોં કો મહઝ ઈસ લિયે પૈદા કિયા હૈ કે વો મેરી ઈબાદત કરે.” (સૂર: ઝારિયાત, ૫૧:૫૬)

ઔર ઈબાદત કા માઅ્ની અલ્લાહ સુબ્હાનહૂ કી ઈતાઅત ઔર ઉસકે રસૂલ મુહમ્મદ ﷺ કી ઈતાઅત હૈ કે જિસ કામ કા અલ્લાહ ઔર ઉસકે રસૂલ ને હુકમ દિયા હો વો કામ કરે ઔર જિસસે અલ્લાહ ઔર ઉસકે રસૂલ ને રોકા હો ઉસકો છોડ દે, ઔર ઉસકે સાથ અલ્લાહ ઔર ઉસકે રસૂલ પર ઈમાન લાએ, ઔર અમલ મૈં અલ્લાહ ત્આલા કે લિયે ઈખ્લાસ ભી હો ઔર ઉસકી ઈન્તિહાઈ મુહબ્બત ભી ઔર ઉસ અકેલે કે લિયે કમાલ આજઝી હો, જૈસા કે અલ્લાહ ત્આલા ફરમાતા હૈં :

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ

“ઔર તુમ્હારે પરવરદિગાર ને યે ફૈસલા કર દિયા હૈ કે તુમ સિર્ફ ઉસી કી ઈબાદત કરના.” (સૂર: બની ઈસરાઈલ, ૧૭:૨૩)

યાઅ્ની હુકમ દિયા ઔર તાકીદ ફરમાઈ કે ઉસ અકેલે કી ઈબાદત કી જાએ. નીઝ ફરમાયા :

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١﴾ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢﴾ مُلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ﴿٣﴾  
إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴿٤﴾

“हर तरह की ता’रीफ अल्लाह के लिये है, जो तमाम जहानों का पालनेवाला है, रहम करनेवाला महरबान है, रोझे क्रियामत का मालिक है. हम तेरी ही ईबादत करते हैं और तुज ही से मदद मांगते हैं.” (सूर: इतिहा, १:१-४)

एन आयात में अल्लाह त्आला ने वजाहत इरमाई के वही इस बात का मुस्तहिक है के उस अकेले की ईबादत की जाये और उस अकेले से मदद तलब की जाये. नीज अल्लाह अज-व-जल ने इरमाया :

فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ الدِّينَ الْحَافِظُ ۗ

“लिहाजा खालिसतन् अल्लाह ही की ईबादत करो. देओ, अल्लाह की ईबादत औसी हो जो (शिक वगैरह से) खालिस हो.” (सूर: रुमर, ३८:२)

नीज इरमाया :

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝

“खालिसतन् अल्लाह ही को पुकारो, ईबादत उसी के लिये है, अगर ये ये बात काफिरों को बूरी लगती हो.” (सूर: मु’मिन, ४०:१४)

और इरमाया :

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ۝

“और बिलाशुबा मस्जिदें अल्लाह के लिये हैं, लिहाजा अल्लाह के साथ किसी और को ना पुकारो.” (सूर: जिन, ७२:१८)

और इस मजमून की आयात बहुत है, जो अल्लाह अकेले की ईबादत के वुजूब पर दलावत करती हैं और ये तो मालूम है के दुआ की तमाम किसमें ईबादत हैं. लिहाजा किसी के लिये भी ये जाईज नहीं के अपने परवरदिगार के सिवा किसी को पुकारे, या उससे ईमदाद तलब करे या उससे इरियाद करे, ताके वो एन आयात पर और इसी माअनी की दूसरी आयात पर अमल पैरा हो सके, और ये मुमानिअत सिर्फ औसे उमूर में है, जो आदी उमूर और हिस्सी अस्बाब के ईलावा हैं, जिन पर कोई जिंदा और हाजिर मप्लूक कादिर होती है, क्यूं के औसे उमूर ईबादत नहीं है, बल्के नस और ईजमाअ की रू से ये जाईज है के अक ईन्सान दूसरे ईन्सान से औसे मुआमले में मदद तलब करे, जिस पर वो कादिर है; जैसे वो उसके बेटे या भादिम या कुत्ते या किसी औसी

ही चीज के शर से बचने के लिये जैसे इन्सान से मदद याहता है या उसके पास इरियाह करता है, जो जिंदा है, मौजूद है और कादिर है, या अगर गाँव है तो ये इस्तआनत और इस्तगाशा हिस्सी अस्बाब के जरिये हो, जैसे पत व किताबत वगैरह. इसी तरह घर की ता'मीर या अपनी गाडी की इस्लाह और जैसे ही दूसरे कामों में जिंदा, मौजूद और कादिर इन्सान से मदद तलब करना जाँज है. उजरत मूसा عليه السلام का किस्सा भी इसी बाब से है, युनांये अल्लाह त्आला इरमाता है :

فَاسْتَعَاثَ الَّذِي مِنْ شَيْعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ

“तो जो शप्स मूसा عليه السلام के गिरोह से था. उसने अपने दुश्मन गिरोह के आदमी के पिलाइ मूसा عليه السلام से इरियाह की.” (सूर: कसस, २८:१५)

युनांये जिंदा और जंग वगैरह में किसी इन्सान का अपने साथियों से इरियाह करना और जैसे ही दूसरे काम इसी बाब से हैं. मगर मुरदों, जिनों, इरिश्तों, दरभों और पत्थरों से इस्तगाशा शिके अकबर है और पेहले मुशरिको का सा ही अमल है के वो अपने मा'बूदों, मसलन् लात, उज़्जा और दूसरे मा'बूदों से इस्तगाशा करते थे.

इसी तरह किसी जिंदा इन्सान से भी इस्तआनत और इस्तगाशा शिके अकबर है, जिसके मुताल्लिक कोई शप्स ये अ'तिकाह रभता हो के वो वली है और जैसे कामों पर कुदरत रभता है, जिस पर अल्लाह के सिवा कोई कादिर नहीं, जैसे मरीजों को शिके देना, दिलों की हिदायत, जन्नत में दापिला और दोज़्भ से निजात वगैरह. साबिका आयात और जो आयात व अलाहीस इस माअ्नी में आँ है, वो सब इस बात पर दलायत करती हैं के जैसे तमाम उमूर में दिलों को अल्लाह त्आला की तरफ़ मुतवज्जह करना और पालिसतन् अल्लाह अकेले की इबाहत करना वाजिब है, क्यूं के बंदों को पैदा ही इस लिये किया गया है और इसी बात का उन्हें हुक्म दिया गया है, जैसा के अल्लाह सुब्दानहू के दर्जे जेल इरशादात से वाजेह है :

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا

“अल्लाह की इबाहत करो और उसके साथ किसी को शरीक ना बनावो.”

(सूर: निसा, ४:३६)

नीज इरमाया :

وَمَا أَمْرٌ إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ

---

“और उन्हें हुक्म तो यही दिया गया था के वो ज़ालिम अमल के साथ अल्लाह की ईबादत करें.” (सूर: बय्यिनह, ८८:५)

और उजरत मआज़ ﷺ वाली उदीस में नबी ﷺ ने इरमाया :

“बंदो पर अल्लाह तूआला का ये उक है के वो उसी की ईबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक ना बनाएं.”

ईस उदीस की सिहत पर शैभैन का ईतिहास है, नीज ईब्ने मसूदिह ﷺ वाली उदीस में आप ﷺ ने इरमाया :

“जो शप्स ईस डाल में मरा के वो अल्लाह के किसी शरीक को पुकारता था वो दोज्ज में दाखिल होगा.”

ईस उदीस को बुजारी ने रिवायत किया है.

और सदीहैन में ईब्ने अब्बास ﷺ से मरवी है के नबी ﷺ ने जब उजरत मआज़ बिन जबल ﷺ को यमन की तरफ (गवर्नर बनाकर) भेजा तो उनसे इरमाया :

“तुम उन लोगों के पास जा रहे हो, जो अहले किताब है. लिहाजा पेहली चीज जिसकी तरफ तुम उन्हें दा'वत दो ये शहादत है के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं.” और अक रिवायत में है के “उन्हें दा'वत दो के वो शहादत दें के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ये के मैं अल्लाह का रसूल हूं.” और बुजारी की रिवायत यू है “उन्हें दा'वत दो यहां तक के वो अल्लाह की तौहीद का ईकरार करें.”

और सदीह मुस्लिम में तारिक बिन अशीम अला शुजई ﷺ से रिवायत है के नबी ﷺ ने इरमाया :

“जिसने अल्लाह को अक जाना और जिन चीजों की अल्लाह के सिवाय ईबादत की जाती है उनका ईन्कार किया उसका माल और उसका पून हराम कर दिया गया है और उसका हिसाब अल्लाह अज-व-जल के जिम्मे है.”

और ईस मजमून की अहादीस बहुत है. यही वो तौहीद है, जो दीने ईस्लाम की असल, मिल्लत की असास ओर अत्रे शरीअत का सर है. यही सब से अहम इरीजा है ओर यही जिन्न व ईन्सान की पैदाईश की हिकमत और तमाम रसूलों, उन पर सलातो-सलाम हो, के भेजने की हिकमत है और ईन बातों पर दलावत करनेवाली आयात पेहले गुजर चुकी है और कुछ दर्जे जेल हैं :



وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

“और मैंने जिन्नों और इन्सानों को सिर्फ़ इस लिये पैदा किया है के वो मेरी ईबादत करे.” (सूर: जारियात, ५१:५६)

और अल्लाह अज़-व-जल का ये कौल भी इस पर दलील है :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۗ

“और हमने हर उम्मत में अक रसूल भेजा के वो लोग अल्लाह की ईबादत करें और अल्लाह के सिवा दूसरों की हुकमरानी से बयें.” (सूर: नहल, १६:३६)

नीज़ इरमाया :

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿١٥﴾

“और आप से पेहले हमने जो रसूल भी भेजा उसे हमने यही वही की के मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, लिखाजा मेरी ही ईबादत करो.” (सूर: अंबिया, २१:२५)

नीज़ अल्लाह त्आला अज़-व-जल ने हज़रत नूह عليه السلام, सालेह عليه السلام, शुअैब عليه السلام की तरफ़ से कुरआने-पाक में बयान इरमाया के इन रसूलों ने अपनी कौम से कहा :

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۗ

“अल्लाह की ईबादत करो, उसके सिवा तुम्हारे लिये कोई मा'बूद नहीं.”

(सूर: आ'राफ़, ७:५८)

और ये तमाम रसूलों की दा'वत थी, जैसा के इस पर दोनों साबिक आयात दलावत करती हैं और इन रसूलों के दुश्मनों ने ये अे'तिराफ़ किया है के वाकई रसूलों ने उन्हें अकेले अल्लाह की ईबादत करने और उसके सिवा बाकी मा'बूदों को, जिनकी वो ईबादत करते थे, छोडने का हुकम दिया था, जैसा के कौमे आद के किस्से में अल्लाह अज़-व-जल इरमाता है के उन लोगों ने हूद عليه السلام से कहा :

أَجِئْنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا ۗ

“क्या तू हमारे पास ईस लिये आया है के हम अल्लाह को ही पूजें और जिन्हें हमारे आबा-व-अजदाए पूजते थे उन सब को छोड दें?” (सूर: आ’राफ़, ७:७०)

और कुरैश का जवाब अल्लाह त्आला ने यूं बयान फ़रमाया, जब के हमारे नबी मुहम्मद ﷺ ने उन्हें अकेले अल्लाह की ईबादत करने और उन सब मा’बूदों को, याअ्नी फ़रिश्तों, अवलिया, बूतों और दरभ्तों वगैरह को, छोडने की दा’वत दी, जिनकी वो पूजा करते थे, तो वो कइने लगे :

أَجْعَلِ الْإِلَهَةَ الْهَاءَ وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ ۝

“ईसने तो सारे मा’बूदों के बजाय सिर्फ़ अेक मा’बूद बना दिया. ये तो बड़ी अज्जब बात है.” (सूर: सोद, ३८:५)

नीज सूर: अस्-साफ़ात में अल्लाह ने कुरैश का कौल यूं बयान फ़रमाया :

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۖ يَسْتَكْبِرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ  
أَيْنَا تَارِكُوا إِلَهَتَنَا لَشَاعِرٍ فَجَنُونِ ۝

“जब ईन्हें ये कहा जाता के अल्लाह के सिवा कोई मा’बूद नहीं, तो तकब्बुर करते और कइते : भला हम अेक दीवाने शाईर की जातिर अपने मा’बूदों को छोड सकते हैं?” (सूर: साफ़ात, ३७:३५-३६)

और ईस मजमून पर दलावत करनेवाली आयात बहुत है, और जे आयात व अहादीस हमने जिक्र की हैं, उनसे भी आप पर ये बात वाजेह हो जायेगी. अल्लाह त्आला मुजे और आप को दीन की समज और रब्बुल आलमीन के हक में बसीरत की तौफ़ीक अता फ़रमायें.

अब ये द्आअें और ईस्तगाशा की कई अकसाम, जे आपने अपने सवाल में बयान की है, सब के सब शिर्क अकबर की किस्म से हैं, क्यूं के ये गैरुल्लाह की ईबादत हैं और अैसे उमूर की तलब है, जिन पर अल्लाह के सिवा कोई मुरदा या गाईब शप्स कादिर नहीं हो सकता. नीज ये बात पेहले लोगों के शिर्क से बदतर है, क्यूं के वो लोग तो सिर्फ़ आसूदगी की हलत में शिर्क करते थे, मगर जब कोई मुसीबत पडती तो फिर जालिसतन् अल्लाह ही की ईबादत करते थे, क्यूं के वो लोग जानते थे के ईस मुसीबत से निजात सिर्फ़ अल्लाह ही दे सकता है, और कोई नहीं दे सकता, जैसा के अल्लाह सुब्धानहू ने अपनी किताबे-मुबीन में ईन मुश्रिकीन का ये कौल बयान किया है :

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِكِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى  
الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٠﴾

“जब वो कश्ती में सवार होते, तो ખાલિસતન્ અલ્લાહ કે ફરમાબરદાર બનકર સિફ અલ્લાહ હી કો પુકારતે, ફિર જબ અલ્લાહ ઉન્હેં નિજાત દેકર ખુશકી કી તરફ લે આતા, તો ફિર શિર્ક કરને લગતે.” (સૂર: અન્કબૂત, ૨૮:૬૫)

એક દૂસરી આયત મેં અલ્લાહ અઝ-વ-જલ ઈનકો મુખાતિબ કરકે ફરમાતા હૈ :

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ  
إِلَى الْبَرِّ اعْرَضْتُمْ ۗ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٥١﴾

“જબ અલ્લાહ તુમ્હેં સમંદર મેં સખી દિખાતા હૈ, તો તુમ અલ્લાહ કે સિવા સબ કુછ ભૂલ જાતે હો, જિન્હેં તુમ પુકારતે હો. ફિર જબ તુમ્હેં નિજાત દેકર ખુશકી કી તરફ લાતા હૈ તો ડુગરદાની કરને લગતે હૈં, ઔર ઈન્સાન તો હૈ હી નાશુકા.”

(સૂર: બની ઈસરાઈલ, ૧૭:૬૭)

અબ અગર ઈન પિછલે મુશ્રિકોં મેં કોઈ કહનેવાલા યૂં કહ દે કે : હમારા યે મક્સદ તો નહીં હોતા કે યે હસ્તીયાં બઝાતે ખૂદ કોઈ ફાયદા પહુંચાતી હૈ યા હમારે મરીજોં કો શિફા દેતી યા હમેં નફા પહુંચા સકતી હૈં, હમારા મક્સદ તો સિફ યે હોતા હૈ કે વો અલ્લાહ કે યહાં હમારી સિફારિશ કરેં.

તો ઈસકા જવાબ યે હૈ જો ઉસે કહના ચાહિયે કે :

પેહલે કાફિરોં કા મક્સદ ઔર મુરાદ ભી યહી કુછ હોતા થા. ઉનકી મુરાદ યે ના હોતી કે ઉનકે મા'બૂદ બ-નફસહૂ પૈદા કરતે યા રિઝ્ક દેતે યા નફા યા નુકસાન પહુંચા સકતે હૈં, ક્યૂં કે યે ચીઝ ઉસ બાત કો બાતિલ બના દેતી હૈં, જિસે અલ્લાહ ત્આલા ને કુરઆન મેં કુરૈશ કે હવાલે સે ઝિક ક્રિયા હૈ. વો ભી સિફ ઉનકી શફાઅત ઔર અલ્લાહ કે યહાં ઉનકે મરતબે ઔર કુર્બ હી કા ઈરાદા રખતે થે, જૈસા કે અલ્લાહ ત્આલા ને સૂર: યૂનુસ (الطُّور) મેં ફરમાયા :

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَنْصُرُهُمْ ۚ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ  
شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۗ

“वो लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते थे, जो ना उन्हें कुछ नुकसान पहुंचा सके और ना फायदा दे सकें, और कलते के अल्लाह के यहां ये हमारे सिफारिशी हैं.” (सूर: यूनुस, १०:१८)

तो अल्लाह सुब्हानहू त्आला ने उन्हें यूं जवाब दिया :

قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۗ سُبْحٰنَهُ  
وَتَعْلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

“आप कल दिजिये, क्या तुम अल्लाह को उस बात की खबर देते हो जिसका वजूद ना आसमानों में उसे मालुम है और ना जमीन में ? वो पाक है और जो कुछ वो शिर्क करते हैं उससे बलंद है.” (सूर: यूनुस, १०:१८)

गोया अल्लाह सुब्हानहू ने ये वज्जहत इरमाई के उसे ना आस्मानों में और ना जमीन में किसी जैसे शप्स के वजूद का इल्म है, जो अल्लाह का इस तौर पर सिफारिशी बन सकता हो, जिसका ये मुशूरिक लोग कसद रખते हैं, और जिस चीज के वजूद को अल्लाह ना जानता हो वो मौजूद ही नहीं, क्यूं के अल्लाह सुब्हानहू से कोई चीज मखड़ी नहीं रह सकती. नीज अल्लाह त्आला ने सूर: जुमर में इरमाया :

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ الْكِتَابَ  
بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿٢﴾ ۗ أَلِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۗ

“ये किताब अल्लाह गालिब, डिक्मतवाले की तरफ से नाजिलशुदा है. हमने उसे आप ﷺ की तरफ उक के साथ नाजिल किया, तो खालिसतन् अल्लाह ही की इबादत करो, इबादत उसी के लिये है. देखो, अल्लाह के लिये खालिस इबादत ही सज्जवार है.” (आ. १-२)

गोया अल्लाह सुब्हानहू ने ये वज्जहत इरमाई के इबादत सिर्फ उस अकेले के लिये है और इस इबादत के लिये बंदों पर इप्लास वाजिब है, क्यूं के अल्लाह त्आला ने नबी ﷺ को इप्लास के साथे इबादत करने का हुक्म दिया, तो ये हुक्म सब लोगों के लिये है, और यहां दीन का माअनी इबादत है और इबादत से मुराद अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की इताअत है, जैसे के गुजर युका ओर इस इबादत में हुआ, इस्तगाशा, ખૌફ और रिजाअ, कुरबानी और नज़र जैसे ही दाखल् है, जैसे इस में



नमाज और रोजा वगैरह दायिम है, जिनका अल्लाह ने और उसके रसूल ने हुकम दिया है, फिर इसके बाद अल्लाह अज-व-जल ने फरमाया :

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ  
زُلْفَىٰ ط

“और जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा अपने कारसाज रभे हैं (वो कहते हैं) के हम उनकी इबादत सिर्फ़ इस लिये करते हैं के वो हमें मरतबा के लिहाज से अल्लाह के करीब कर दें.” (सूर: जुमर, ३८:३)

याअनी वो कहते हैं के हम तो उनकी इबादत सिर्फ़ इस लिये करते हैं के वो हमें मरतबा के लिहाज से अल्लाह के करीब कर दें. अल्लाह सुब्दानलू ने उनको यूं जवाब दिया :

إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ  
كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾

“जिन बातों में ये लोग इखिलाफ़ करते हैं उनका फैसला अल्लाह त्आला फरमा देगा. बिलाशुबा अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता, जो जूटा और नाशुका है.”

(सूर: जुमर, ३८:३)

इस आयते-करीमा में अल्लाह त्आला ने ये वजाहत फरमाई के काफ़िर अपने अवलिया की इबादत सिर्फ़ इस लिये करते थे के वो उन्हें अल्लाह के करीब कर दें, और पुराने और नये सब तरह के काफ़िरों का यही मकसद होता है. युनांये अल्लाह त्आला ने अपने इस कौल से उस नजरिये को बातिल करार दिया, जिन बातों में ये लोग इखिलाफ़ करते हैं. अल्लाह उनके दरमियान इन बातों का फैसला कर देगा. बिलाशुबा अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता, जो जूटा और नाशुका हो.

गोया अल्लाह सुब्दानलू ने उनका जूट वाजेह कर दिया के ये मलज उनका गुमाने बातिल है के उनके मा'बूद उन्हें अल्लाह के करीब कर देंगे और उनके कुफ़ की ये वजाहत फरमाई के वो इबादत उनके लिये फेर देते थे. अब जो शप्स थोडी सी भी तमीज रभता हो उसे इससे ये मालूम हो जाओगा के पेहले काफ़िरों का कुफ़ सिर्फ़ ये था के उन्होंने अपने ओर अल्लाह त्आला के दरमियान मप्लूकात में से नबीयों, वलीयों, दरभों और

पत्थरों वगैरह को सिंकारिशी बना रखा था, और वो ये अकीदा रखते थे के ये चीजें  
 अल्लाह सुब्हानहू के रज़न और रजा से ही उनकी सृष्टरतें पूरी करते हैं, जैसा के  
 वुज़रा, बादशाहों के पास सिंकारिश करते हैं. गोया उन्होंने अल्लाह अज़-व-ज़ल को  
 भी बादशाहों और वुज़रा पर कियास किया और कहा के : जैसे किसी बादशाह या  
 सरदार से कोई काम हो तो वो उसके खवास और वज़ीरों को सिंकारिशी बनाता है,  
 इस तरह हम अंबिया और अवलिया की र्बादत के जरिये अल्लाह त्आला का  
 तर्कुब हासिल करते हैं, और ये बात र्न्तिलाई गलत है, क्यूं के अल्लाह सुब्हानहू के  
 मुशाबिह कोई चीज़ नहीं और ना ही उसे उसकी मज़ूक पर कियास किया जा सकता है  
 और ना सिंकारिश के मुआमले में उसकी र्ज्जत के बगैर कोई उसके यहां सिंकारिश कर  
 सकता है, और ये सिंकारिश सिर्फ अहले तौहीद के हक में ही हो सकती है, और वो  
 पाक और भरतर है, जो हर चीज़ पर कादिर है और हर चीज़ को जाननेवाला है. ना  
 वो किसीसे डरता है और ना उसे कोई डरा सकता है, क्यूं के वो पाक है, अपने बंदो पर  
 तसल्लुत रखता है और उनमें जिस तरह याहता है तसर्कुफ कर सकता है. बखिलाफ़  
 बादशाहों और सरदारों के, के वो ना तो किसी चीज़ पर कुदरत रखते हैं और ना हर  
 चीज़ जानते हैं. लिहाज़ा जिन बातों से वो आज़िज़ हों उन्हे जैसे आदमियों की सृष्टरत  
 होती है, जो उनकी र्आनत करें और ये आदमी उनके वुज़रा, खवास और उनके  
 लश्कर होते हैं, जैसा के लोग भी अपनी हाज़त र्न लोगों तक पहुंचाने के मुहताज़  
 होते है, जो उसकी हाज़त को नहीं जानते. लिहाज़ा वो वज़ीरों और खवास में से जैसे  
 शख्स के मुहताज़ होते हैं, जो उनके लिये बादशाह या सरदार की महरबानी और  
 रजामंदी तलब करें. मगर परवरदिगार अज़-व-ज़ल का मुआमला ऐसा नहीं. वो  
 पाक है, अपनी तमाम मज़ूक से बेनियाज़ है, लोगों पर उनकी मांगों से ज़्यादा  
 महरबान है. वो हाकिमे आदिल है, जो हर चीज़ को अपनी हिकमत, र्ल्म और  
 कुदरत का जो तकाज़ा है उसके मुताबिक उसे ठीक मकाम पर रखता है. लिहाज़ा किसी  
 भी सूरत में उसे उसकी मज़ूक पर कियास करना ज़रूज़ नहीं. इसी लिये अल्लाह  
 सुब्हानहू ने अपनी किताब में ये वज़ाहत इरमा दी के मुश्रिकीन इस बात का र्करार  
 करते थे के अल्लाह ही खालिक, रज़िक और मुदब्बिर है. वही बेकस की इरियाद कुबूल  
 करता है और बूराई को दूर करता है और जिंदा करता है और मारता है वगैरह सब  
 अल्लाह ही के अइआल है. र्न मुश्रिकों और रसूलों के दरमियान जघडा तो सिर्फ  
 अल्लाह अकेले की र्बादत के र्प्लास में था, जैसा के अल्लाह अज़-व-ज़ल ने इरमाया :

**وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مِّنْ خَلْقِهِمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ**

“अगर आप उनसे पूछें के तुम्हें किसने पैदा किया, तो यकीनन कहेंगे के अल्लाह त्आला ने.” (सूर: जुहुरुफ़, ४३:८७)

नीज़ इरमाया :

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ  
وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ  
وَمَنْ يُدِيرُ الْأَمْرَ ۗ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۗ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿۳﴾

“आप उनसे पूछें के आसमान और जमीन से रिज़क़ तुम्हें कौन देता है या कानों और आंभो का मालिक कौन है ओर कौन मुरदा से जिंदा को ओर जिंदा से मुरदा को निकालता है और कायनात की तदबीर करनेवाला कौन है? तो वो झैरन् कल उठेंगे के ‘अल्लाह’. आप उनसे कहें : झिर तुम सोचते क्यूं नहीं?” (सूर: यूनुस, १०:३१)

और इस मज़मून की आयात बहुत है और ऐसी आयात पेहले जिक़ हो चुकी, जो इस बात पर दलावत करती हैं के रसूलों ओर उनकी उम्मतों में जघडा सिर्फ़ अल्लाह अकेले की इबादत के इप्लास में था, जैसा के अल्लाह त्आला ने इरमाया :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۗ

“और हमने हर उम्मत में अक रसूल भेजा के अल्लाह की इबादत करो और अल्लाह के सिवा दूसरों की हुक्मरानी से बचो.” (सूर: नह्ल, १६:३६)

और जो भी आयात इन माज़नों में आई है. नीज अल्लाह सुब्हानहू ने कुरआने-करीम के बहुत से मकामात पर सिफ़ारिश की सूरत वाजेह की है. युनांये सूर: अकरल में इरमाया :

مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۗ

“कौन है जो अल्लाह की इजाजत के बगैर उसके यहां सिफ़ारिश कर सके?”

(सूर: अकरल, २:२५५)

और सूर: नजम में इरमाया :

وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا اِلَّا مِّنْۢ بَعْدِ  
اَنْ يَّأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَرْضٰى ﴿۳﴾

“और आसमानों में कितने ही इरिशते हैं, जिनकी ईबादत कुछ भी इयादा नहीं देती, मगर अल्लाह जिसके लिये चाहे ईजाजत बखे और (सिफारिश) पसंद करे.” (सूर: नजम, ५३:२६)

और सूर: अंबिया में इरिशतों का वस्फ यूं बयान इरमाया :

وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

“वो सिर्फ उसी की सिफारिश कर सकेंगे, जिनके लिये अल्लाह की रजा हो और वो तो भूद अल्लाह के भौड़ से डर रहे होंगे.” (सूर: अंबिया, २९:२८)

और अल्लाह अज-व-जल ने ये भी जबर दी है के वो अपने बंदों से कुछ पर राजी नहीं होता, बल्के सिर्फ उनसे शुक्र पर ही राजी होता है, और शुक्र ही उसकी तौहीद और उसकी ईताअत के मुताबिक अमल है. युनांये सूर: जुमर में अल्लाह त्आला ने इरमाया :

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۗ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ط

“अगर तुम नाशुकी करोगे, तो अल्लाह तुमसे बेनियाज है और वो अपने बंदों की नाशुकी पसंद नहीं करता, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये पसंद करता है.” (सूर: जुमर, ३८:७)

और बुभारी ने अपनी सहीह में हजरत अबू हुरैरह رضي الله عنه से रिवायत किया है, उन्होंने कहा : “अय अल्लाह के रसूल ! आपकी शफाअत से ज्यादा हिस्सा किसे मिलेगा ?” आप ﷺ ने इरमाया :

“जिसने फुलूसे दिल से ला-ईलाह ईल्लल्लाह कहा. (आपने कल्ब का लइज ईस्तिमाल इरमाया या नइस का).

और हजरत अनस رضي الله عنه से सहीह हदीस में आया है, आप ﷺ ने इरमाया :

“हर नबी की अेक हुआ मुस्तजाब है, और सब ही अपनी-अपनी हुआ कर चुके और मैंने अपनी हुआ को रोजे किया मत अपनी उम्मत की शफाअत के लिये मलइज कर रहा है ओर वो ईन्-शा अल्लाह हर उस शइस को पडुंयेगी जे मेरी उम्मत में से ईस हाल में मरा हुवा हो के उसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना किया हो.”



और इस मजमून की अछादीस बहुत है और जो कुछ हमने आयात व अछादीस जिक्र की है सब इस बात पर दलावत करती है के ईबादत अल्लाह अकेले का एक है, उसमें से कुछ भी गैरुल्लाह के लिये सिर्फ करना जाईज नहीं, ना अंबिया के लिये और ना ही दूसरे के लिये. नीज ये के शफाअत सिर्फ अल्लाह अकेले की मिलीयत (का एक) है, जैसा के अल्लाह सुब्बानहू ने इरमाया :

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ط

“आप कइ दिजिये के शफाअत पूरी की पूरी अल्लाह ही के लिये है.”

(सूर: जुमर, ३८:४४)

और शफाअत का एक किसीको सिर्फ उसी सूरत में मिलेगा के शफाअत कुबूल करनेवाले की ईजाजत हो और जिसके एक में शफाअत की जा रही है उसके मुताबिक उसकी रजा हो, ओर वो अल्लाह सुब्बानहू ही हो सकता है, जो तौहीद के ईलावा किसी बात पर राजी नहीं होता, जैसा के पेहले गुजर चुका है. रहे मुश्रिकीन, तो उनका शफाअत में कोई हिस्सा नहीं, जैसा के अल्लाह त्आला ने इरमाया :

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشُّفَعَاءِ ۗ ط

“इन्हें सिफारिश करनेवालों की सिफारिश कुछ फायदा ना देगी.”

(सूर: मुदस्सिर, ७४:४८)

مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۗ ط

“आलिमों का ना कोई दोस्त होगा ओर ना ऐसा सिफारिशी जिसकी बात मानी जाये.” (सूर: मु'मिन, ४०:१८)

और जुल्म का लफ्ज अगर अलल-ईत्लाक ईस्तिमाल हो तो उससे मुराद शिक्र होता है, जैसा के अल्लाह त्आला ने इरमाया :

وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۗ ط

“और काफिर ही आलिम है.” (सूर: अकरह, २:२५४)

नीज इरमाया :

إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۗ ط

---

“બિલાશુબા, શિર્ક હી બડા ઝુલ્મ હૈ.” (સૂર: લુકમાન, ૩૧:૧૩)

રહા સવાલ કા વો હિસ્સા, જો આપને બાઝ સૂફિયા કે કૌલ કે મુતાલ્લિક ઝિક ક્રિયા હૈ કે વો મસાજિદ વગૈરહ મેં દરૂદ ઈસ તરહ પઢતે હૈં - “અય અલ્લાહ ! ઈસ પર રહમત ભેજ જિસે તૂને અપને જબરૂતી અસરાર કે લિયે ફટને ઓર રહમાની અનવાર કે અલગ હોને કા સબબ બનાયા, તો વો રબ્બાની દરગાહ સે ગાઈબ ઓર તેરે ઝાતી અસરાર કા ખલીફા બન ગયા...” (આખિર તક)

**જવાબ :** ઈસ કલામ ઓર ઈસસે મિલતે-જુલતે કલામ કે મુતાલ્લિક યહી કહા જા સકતા હૈ કે યે તકલ્લુફ ઓર ગુલૂ કી વો કિસ્મ હૈ, જિસસે હમારે નબી ﷺ બચતે રહે, જૈસે કે સહીહ મુસ્લિમ મેં હજરત અબ્દુલ્લાહ બિન મસૂઊદ ﷺ કી રિવાયત હૈ કે રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને ફરમાયા :

“ગુલૂ કરનેવાલે હલાક હુવે. યે બાત આપને ત્રીન બાર ફરમાઈ.”

ઈમામ ખતાબી ﷺ કહતે હૈં કે ‘મુતનતઅ’ એહલે કલામ કે મઝાહિબ કે મુતાબિક વો લોગ હૈં, જો બહસ મેં તકલ્લુફ સે કિસી ચીઝ કી ગુમરાહી તક જા પહુંચે. યે લોગ લા-યાઅની બાતોં મેં દાખિલ હોનેવાલે હૈં ઓર ઐસી બહસ કરતે હૈં જિન તક લોગોં કી અક્લોં કી રિસાઈ ના હો.

ઓર અબૂલ સાદાત ઈબ્ને અલ-અસીર કહતે હૈં : યે વો લોગ હૈં જો કલામ મેં ગુલૂ કરને ઓર ગહરાઈ તક ચલે જાનેવાલે હૈં ઓર અપને હલક કે દૂર કે હિસ્સે સે કલામ કરનેવાલે હૈં યે લફઝ ‘નતઅ’ સે મશક હૈ, જિસકા માઅની તાલૂ હૈ. ફિર યે લફઝ હર ઉસ શખ્સ કે મુતાલ્લિક ઈસ્તિમાલ હોને લગા જો અપને કૌલ ઓર ફઅલ મેં ગહરાઈ તક ચલા જાએ.

લુગ્ત કે ઈન દો ઈમામોં સે જો કુછ મઝકુર હુવા, ઈસ લિયે આપ પર ઓર જો શખ્સ ભી અદના સી બસીરત ભી રખતા હો ઉસ પર યે બાત વાઝેહ હો જાએગી કે હમારે નબી ઓર હમારે સરદાર ﷺ પર સલાતો-સલામ કી યે કેફિયત તકલ્લુફ ઓર ગુલૂ કી વો કિસ્મ હૈ, જિસસે મના ક્રિયા ગયા હૈ, ઓર ઈસ સિલસિલે મેં મુસલમાન કે લિયે મશરૂઅ બાત યહી હૈ કે સલાતો-સલામ કી સિફત મેં રસૂલુલ્લાહ ﷺ સે જો કેફિયત સાબિત હૈ ઉસે હી ઈખ્તિયાર કરે ઓર યે દૂસરી કેફિયાત સે બેનિયાઝ ભી કર દેતી હૈ ઓર ઈસ બારે મેં સહીહેન કે રિવાયાત મૌજૂદ હૈ. બુખારી મેં કઅબ બિન ઉજઝહ ﷺ સે રિવાયત હૈ કે સહાબા ﷺ ને કહા : અય અલ્લાહ કે રસૂલ ! હમેં આપ પર દરૂદ ભેજને કા હુકમ દિયા ગયા હૈ, તો હમ આપ પર કેસે દરૂદ ભેજેં ? આપ ﷺ ને ફરમાયા : યું કહો -

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ.

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा सल्लैत अला एबराहीम व अला आलि एबराहीम एन्नक हमीदुम्-मजिद, व बारिक अला मुहम्मद व अला आलि मुहम्मद कमा बारकत अला एबराहीम व अला आलि एबराहीम एन्नक हमीदुम्-मजिद.

“अय अल्लाह ! मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर रहमत भेज, जैसे तूने एब्राहीम عليه السلام और एब्राहीम عليه السلام की आल पर रहमत भेज थी. बिलाशुबा तू काबिले सताईश है और बुरुर्गावाला है और मुहम्मद ﷺ और मुहम्मद ﷺ की आल पर बरकत नाजिल इरमा, जैसे तूने एब्राहीम عليه السلام और आले एब्राहीम عليه السلام पर बरकत नाजिल इरमाई थी. बिलाशुबा तू काबिले सताईश है, बुरुर्गावाला है.”

और सहीहैन में अबू हमीद अदी रूसे से रिवायत है के सहाबा ने कहा : अय अल्लाह के रसूल ! हम आप पर कैसे इरद भेजें, तो आप ﷺ ने इरमाया : कडो —

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ أَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ.

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व अला अजवाजिही व जुरियतिही कमा सल्लैत अला आलि एबराहीम व बारिक अला मुहम्मद व अजवाजिही व जुरियतिही कमा बारिक अला आलि एबराहीम एन्नक हमीदुम्-मजिद.

(अय अल्लाह ! मुहम्मद ﷺ, आप की बीवीयों पर और आप की अवलाद पर रहमत भेज, जैसा के तूने आले एब्राहीम पर रहमत भेज और मुहम्मद ﷺ पर और आप की बीवीयों पर और आप की अवलाद पर बरकत नाजिल इरमा, जैसे तूने आले एब्राहीम पर बरकत नाजिल इरमाई. बिलाशुबा तू काबिले सताईश है, बुरुर्गावाला है.)

और सहीह मुस्लिम में अबू मसूद अन्सारी रूसे से रिवायत है, वो कहते हैं

કે બશીર બિન મસૂઝિદ ને કહા : અય અલ્લાહ કે રસૂલ ! હમેં અલ્લાહ ને આપ પર દરૂદ ભેજને કા હુકમ દિયા હૈ, તો હમ આપ પર કેસે દરૂદ ભેજેં. આપ યુપ હો ગયે, ફિર ફરમાયા : કહો —

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَ  
وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ  
حَمِيدٌ مُّجِيدٌ وَالسَّلَامُ كَمَا عَلَّمْتُمْ.

અલ્લાહુમ્મ સલ્લિ અલા મુહમ્મદ વ અલા આલિ મુહમ્મદ કમા સલ્લઈત અલા ઈબ્રાહીમ વ બારિક અલા મુહમ્મદ વ અલા આલિ મુહમ્મદ કમા બારકત અલા ઈબ્રાહીમ ઈત્તક હમીદુમ્-મજીદ, વસ્સલામુ કમા અલ્લમતહુ.

(અય અલ્લાહ ! મુહમ્મદ ﷺ ઓર આલે મુહમ્મદ ﷺ પર રહમત ભેજ, જૈસા કે તૂને ઈબ્રાહીમ પર રહમત ભેજી ઓર મુહમ્મદ ﷺ ઓર આલે મુહમ્મદ ﷺ બરકત નાઝિલ ફરમા, જૈસે તૂને તમામ જહાંવાલોં સે ઈબ્રાહીમ પર બરકત નાઝિલ ફરમાઈ. બિલાશુબા તૂં કાબિલે સતાઈશ, બુઝુર્ગીવાલા હૈ ઓર સલામ વો હૈ જૈસા કે તુમ જાનતે હો.)

યે અલ્ફાઝ યા ઈનસે મિલતે-જુલતે ઓર દૂસરે અલ્ફાઝ વો હૈ, જો નબી ﷺ સે સાબિત હૈ. એક મુસલમાન કો યાહિયે કે રસૂલુલ્લાહ પર સલાતો-સલામ મેં યહી અલ્ફાઝ ઈસ્તિમાલ કરે, ક્યૂં કે રસૂલુલ્લાહ ﷺ યે બાત સબ લોગોં સે ઝ્યાદા જાનનેવાલે થે કે ઉનકે હક મેં કૌનસે અલ્ફાઝ ઈસ્તિમાલ કરના ઝ્યાદા મુનાસિબ હૈ, જૈસા કે વો યે બાત ભી સબ સે ઝ્યાદા જાનનેવાલે થે કે અપને પરવરદિગાર કે હક મેં કૌન સે અલ્ફાઝ ઈસ્તિમાલ કરના યાહિયે.

રહે ઉસ કિસ્મ કે અલ્ફાઝ, જો બા-તકલ્લુફ ઈસ્તિમાલ કિયે ગયે હોં, બિદઈ કિસ્મ કે હો ઓર કઈ માઝૂનોં કા એહતિમાલ રખતે હોં, યે સહીહ નહીં, જૈસા કે વો અલ્ફાઝ જિનકા સવાલ મેં ઝિક હુવા હૈ. લિહાઝા ઈન્હેં ઈસ્તિમાલ ના કરના યાહિયે, ક્યૂં કે ઈનમેં તકલ્લુફ હૈ ઓર કઈ બાતિલ માઝૂનોં સે ઈનકી તફસીર ભી હો સકતી હૈ. ફિર યે ઉન અલ્ફાઝ કે ભી ખિલાફ હૈ જો રસૂલુલ્લાહ ﷺ ને પસંદ ફરમાએ ઓર અપની ઉમ્મત કો ઉનકી હિદાયત કી, જબ કે આપ સારી ખલકત સે ઝ્યાદા જાનનેવાલે, ઉનકે સબ સે ઝ્યાદા ખૈરખવાહ ઓર તકલ્લુફ સે દૂર રહનેવાલે થે. આપ પર આપ કે પરવરદિગાર કી તરફ સે બેહતરીન સલાતો-સલામ હો, ઓર મેં ઉમ્મીદ રખતા હૂં કે જો કુછ દલાઈલ હમને ઝિક કિયે હેં ઉનસે હકીકતે તૌહીદ ઓર હકીકતે શિર્ક કી વઝાહત હો જાતી હૈ



और उस ईर्क की भी जो ँस बारे में पेडले मुशूरिकों और बाद के मुशूरिकों में है.

नीज रसूलुल्लाह ﷺ पर मशरूअ दरूद की कैङ्कियत में ये बयान काङ्की ओर तालिबे उक के लिये किनाअत के काबिल है. अलबत्ता जिस शप्स की मआरिङ्कत उक की रगबत ही ना हो वो अपनी प्वालिश के ताबे है, जिसके मुताल्लिक अल्लाह अज-व-जल ने इरमाया :

فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُونَ أَهْوَاءَهُمْ ط وَمَنْ أَضَلُّ  
مِمَّن اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللَّهِ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ  
الظَّالِمِينَ ﴿٥٠﴾

“ङ्किर अगर वो आप की बात ना माने तो जान लिजिये के वो सिङ्की अपनी प्वालिशात के पीछे लगे हुवे हैं, और उस शप्स से बढकर गुमराह कौन होगे जो अल्लाह की तरङ्क से आमदे लिदायत को छोडकर अपनी प्वालिश के पीछे लग जाअे. बिलाशुबा अल्लाह त्आला जालिम लोगों को लिदायत नहीं देता.”

(सूर: कसस, २८:५०)

ँस आयते-करीमा में अल्लाह त्आला ने ये वजाहत इरमाई के अल्लाह त्आला ने अपने नबी ﷺ को जो दीने-उक और लिदायत देकर भेजा है, तो ँस निस्बत लोग दो किस्म के होते हैं — अेक वो, जो अल्लाह और उसके रसूल की बात माननेवाले हैं और दूसरे वो, जो अपनी प्वालिश के पीछे चलनेवाले हैं नीज अल्लाह सुब्धानलू ने ये बतलाया के जो शप्स अल्लाह की लिदायत को छोडकर अपनी प्वालिशात के पीछे लगता है उससे ज्यादा गुमराह कोई नहीं.

हम अल्लाह अज-व-जल से प्वालिश की ँत्तिबाअ से मलङ्कूज रहने की दुआ करते हैं. बिलाशुबा अल्लाह त्आला बडा इयाज और महेरबान है.

و صل الله وسلم على عبده ورسوله نبينا محمد و آله وصحبه و  
اتباعه باحسان الى يوم الدين.

व-सल्लल्लाहु व सल्लम अला अब्दुलू व रसूलुलू नबिय्यिना मुहम्मद व आलिलि व-सहाबिलि व अहबाई बि-ँहसान ँला यव्मुदीन.



# ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત કેટલાક પુસ્તકો

ક્રમિક નં. ૧

## શિશુનની કિલ્લ

(સલાહકાર અભ્યાસ વાચન)

મુસ્લીમ : સવુ પરીચિત અનુદીપિત પ્રકાશકી  
બરો પાની - રીન કાલીન કુશાદી  
તીરાસ મોદીન - મોહમદ ડાકિર બની

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

## ઈસ્લામ ખાલિસ કયા હૈ ?

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ક્રમિક નં. ૧૧

## દુઆએં

કિસ્મત વાંચે પે પુસ્તકી

સહીબ : સહીબ અલમી  
ફિરકા પુસ્તકાલય અલમી (સહીબ અલમી)  
સહીબ : સહીબ અલમી  
સહીબ : સહીબ અલમી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
www.iickutch.blogspot.in

## જિન, ખદુ, ઓર બિમારીઆ દૂર કરનેકા ઈલાહ

સહીબ : સહીબ અલમી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
www.iickutch.blogspot.in

૨૬

## ઝકાત ના મસાઈલ

સે : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
www.iickutch.blogspot.in

## દુઆ કે મસાઈલ

મોલાના મુહમમદ ઉસ્માલ કીલાની

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## નબી કી નમાઝ

(સલાહકાર અભ્યાસ વાચન)

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## લા ઈલા હ ઈલાલાહ

સહીબ : સહીબ અલમી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

## નમાઝ જમાઅત કે સાથે પઠના ફઝલે હૈ

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

### બેનમાઝી ડા અંજામ

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

### નમાઝ પઠનારાઓ માટે ૩૦ ખુશ ખબર

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

## ખુશગવાર કિંદગી કે ઈસ્લામી ઉસૂલ

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## વસીલા

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

## મુખતસર વાશીર અહકસનુલ બયાન

### સૂર : બકરહ

સહીબ : મોલાના મુહમમદ કુશાદી  
સહીબ : મોહમદ ડાકિર બની

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

## બેક ઓરત

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ISLAM SPREADS PEACE, WE SPREAD ISLAM

## તોહકા-એ-રમઝાન

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર  
સેન્ટ્રલ ઓફીસ, ડાંગ બજાર, પુણ - ૬૨૦  
Mo. : 84017 86172

## અહમ દીની અરલાક

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## મીલાકુલની આરો મોતમને રસુલ

(સલાહકાર અભ્યાસ વાચન)

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## મુસલમાન ડા અકીદા

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## રોઝા ના મસાઈલ

સેન્ટ્રલ : મુસ્લામ ઇસ્લામી કલિબ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## સ્ત્રીઓના વિશિષ્ટ મસાઈલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

## દીન કે તીન અહમ ઉસૂલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ



## ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ પાસે, ડાંગ બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મો. : +91 8401786172

Blog : [www.iickutch.blogspot.in](http://www.iickutch.blogspot.in)